A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 280 Subject Hindi

Name of MSS अमर विनोद

Author अमर

Period Folios 68

Script DEVANAGIRI Source Prithi pal Singh

Missing Folios

अमर विनोद ॥
६८ पत्रक ॥ ल० म० २८ पं० प्र० ५



 ॥श्री॥ ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः
अथअमरविनोदलिख्यते
दोहा परमानंदपदवंदगिके
श्रीसाकंभरि ध्यानगुरुगणे
शऔरुशारदाईश्वरि जगत
पतिमान १ विविधयत्नाहरी
है जिके सुगमकरौं अधिका
र अमरविनोदजोग्रंथदीस
कलजीवसुखसार २ श्रीध
न्वंतरचरणाजुगप्रमाणाध
रै आनंदशेषकृत इसग्रंथ
कौ उपज्यौ आनंदकंद ३ इ
तिनिर्घंटमतेद्रव्यगुणं अथज
ल अष्टप्रकार विधि लिख्य
जल ते दोहा वर्षाजलपुननदि
अंतरिक्षपुन कूप जु सरअभ
तडागजलकहेआठजलरू
प ४ अथनदीजलगुणंदोहा
लघुरूखापुनशांतजलअति
पवित्रपुनसोइय वातहरन
कफकोकरनश्रावणमाहें
सोइ इतिनदीजलगुणं अ
थउसरजलगुणंदोहापित
रुषाज्वरकोकरै करैकुष्ट
णासोईयकं ७ सोबपनछार

१

गुण जल उसीर है सो ष ६ अथ
वर्षा जल गुणं वर्षा उस पुन
कफ हरन गुल्म हरन दूदो
ग स्वाज करन पीडा हर न वर्षा
जल पुन सोइ ७ अथ वायु ज
ल गुणं करै पित कफ वायु
हरै उष्ण छार पुनि सोइ कछु
निंदित याको को है करै पीवै
सब को ही ये ८ अथ कूप जल
गुणं दीपन पाचन कफ हर
न पित हरन अभिराम लघु
त्रषा सब दोष हर हित जल
कूप समान ९ अथ डाबर जल
गुणं त्वचा दोष जल डाभ को
कफ समीर पुनि सोई पदी हा
र विहार ते विष्टा बाधी सोई
१० अथ अंतरिक्ष जल गुणं सो
र ग सूल अफारा सोइ पवन
रूप कफ को करै पानी सीतल
होइ ली जै चादर बांद कर ११
चौपई वर्षा जल सोई है मीठा
स्वाद कषाय मिल षु सब मी
ग आश्विन कार्तिक है जल
निर्मल रोग जाय पीवे जो य
ह जल जल उ [illegible] दक है अभि
राम जल का कहे मेद अरु नाम

१३ अधिक रुखि छायामहा छा
याव्याधिकूपकेमशीवारपिल
लहै कुनकुनव्याधिकूप १४ व
स्तितिंगुकांतगुनि डूलपवित्र
करि पृर्स दुर्गंध मूत्रसबसोर
जिहमहा पवित्रजल पूर्ण १५
अथपाषोदकजलगुण दोहा
पाषोदक निव्यामिलै मलिनको
टजल सोइ वर्णकुवर्ण सिवा
रही सो चा चारन लेइ महा अघ
जलजानियै याको पावन देह
१७ अथ हंसोदकजलगुण चौप
ई प्रात काल तुरत जल पावै
वहै स्नान जल धूप धरावै चं
द्र कैर न रात भी धरै प्रात होइ
यगुनिकलशाभरै १८ हंसोद
कयाको कहै तापहरितकहै
जल अरु प्रकार सर्व रोग नि
वारन करै प्रहलन्प्रकाराछिन
मैं हरै १९ पुनि अथ शीतोदकजल
गुणं चौपई मिलरूप तै जल
भरि लावै कोरे भांडे मैं उलटा
वैर है अंश आठवां आई अ
मृत जल रोगी को प्यावै इ २०
चतुर्थ अंश अथ वातु लेइ अ
र्धो वह रोगिको देइ अथ वाप य
र हीन तहे देइ ते हर सन्तमिहो

षहरेई दोहा एक और औष
धि सबै एक औरू जल दूई दो
षहरन सुख कों करन मेद हरन
अग्नि जैय २२ पट्टर एक सीतल
पचै न तोदक पुन सीतल गुन अ
नेक ताकौं कहो घड़ी चार सी
सीतल २३ तप्तोदक सब दोष हर
एल सु पुनि है सोइ कहै जो पुन
हरीत सो रोगी जो है सोइ २४ चौ
पई मार हान जल पाद हरे इ
पित कौ प आ धा वट दे ई पित
कौ देई तीन या धीन पाचन
करै दोई यकुबर हीन २५ अ
प गो दुग्ध गुणं दोहा वात पि
त्त कफ को हरे मल हरन को स
अरु स्वास प्लीह पांडु पुनि सू
ल हर काम नल रूप निकार रह
धातु पुष्ट अरु बल करन सुख
दो पुनि अभिराम बध्य कों वृद्धै
दुग्ध पुन गज्जु क्षीर पुन स्याम
२७ व अथ बकरि दुग्ध गुणं
दोहा कषाय मधुर सीतल अ
म गपित सम ज्वर कौं रा अती
सार औ पित्त हरन ग्रहीत बा
ल बिल बीग २८ त्रिदोष हरन
पुन रात हरन दुर्बलता पुष्ट करै हि

मथिनीमध्यकैसोधाकरैधातु
पाककोदेह २९ अथस्वेतवक
रिदुग्धगुणंदोहा अजाश्लेष्म
कफकोदूरैवातपितकफसैंख्य
ग अजाकछमसवदोसदूर गुरुक
छइकरंग ३० कहौंआनहरी
नसौगुनपुनवरहौंसंगइनमैं
दोषलगतननहीगजेअजोइक
रंग ३१ अथमहिषीदुग्धगुणंदो
हा धातुपुष्टकफकोकरननि
द्रातंद्राहोइपितसमनपुनिह
चिकरनेमहिषीपथ्यपुनसोई
३२ महिषीदुग्धअमृतसहौउ
छमउछमकरपानधातुपुष्टपु
नमदनबलइहिबिधजीवसु
जान ३३ अथपुष्टदुग्धगुणं
दोहा औरौंसूरुलपुनवात
हरस्निग्धउछमकरपानरो
गहरनक्रमसोथपुनउष्टीदु
ग्धवषान ३४ अथस्त्रीपयो
दुग्धगुणंदोहा संजीवनवृ
हछाविवलसंतर्पणानेत्रवि
कारपितश्रमनसहा कहौयु
वतीडिसहीकुमार ३५ अथमे

३
3

डदुग्ध गुणं अनविमलरूषामधु
रउसवातकफ जीतरक्तपितउ
दरत्रिहीमेडीपयइतिभीतर ३६ अम्
लपरा दधि छाछ पुनवदरीफ
ल अंचार मत्समांसजमानधुरीकु
लथीदुग्धविकार ३७ अथगोतक्र
गुणं कासअरुचिपीनसमहामूत्रक
छ कोदेइ सीतलज्वरपुनविषमज्वर
संग्रहणीनासकरेइ ३८ अथगोद
धिगुणं गोदधिअमृतसमानपुनि
वसेछानकैलेइ लवणमिर्चजव
पीसकैभोजनतुरतकरेइ दीपनपा
चनअसैदुखगहणीदोषनिवार
४० अथउजलजुवतीमथीगोदधि
पेमअकोरजेतेरोगनिदानमततक्र
पानकियेभार ४१ अमृतपानवैकुंठ
मैंमृमितक्रसमनाहितक्रपानपु
न अमृतसमदुर्लभमेदिनाहि ४२
सोकैसेकरपाइयैविनाकृष्णकी
सेवमहाउदारथहै सहीनतक्रम
ही सुखदेत ४३ अथमहषीतक्र
गुणान कफकिंचितमहिषीकरै
हरै सोथअतिसार प्लीहअर्शग्रह
णीकरै पुनवलकरै अपार ४४
अथछागतक्रगुणं छागतक्रलघु
मतहरनत्रिदोषहरनपुनशूल
ग्रहणीअर्शविकारपुनिपांडुरोगका

चौप० अतिछिवला मूर्छा भ्रम सम षो
षनखापितकोदूरदूनइसकोपान
तकहीजाहिलिषैगंथआनकै
माहि ४६ अथगोघृतगुणंवात
पितकफकोहरनमी ठाअमृत
समानजीवनजलपवित्रकरदेष
नतउपजैमाहै ४७ महिषीघृतंम
होहामहिषीघृतपुनवलकरनवि
शेषहरनअभिरामपिषमधुर
सीतलमहाकरैसुक्रपुनकाम ४८
अथअजाघृतगुणं अजाआमदीप
नकरैकामस्वासहितजानचक्षुरो
गपुनिछुटैअजिनूयीरोगकरहा
नं४९ अथमूत्रगुणं वर्गः गोमूत्रगुणं
षारउसनतीछनमहाब्बेषमवात
करसोथमेदीगुल्मअनाहपुनकं
ठसूलहरदोष ५० नेत्ररोगमुख
रोगपुनमूत्ररोगगलरोगकासकु
ष्टपुनउदरमुखगनमूत्रयहजो
ग ५१ अथअजामूत्रगुणं अजामू
त्रतीछनमहाकषायउसनकर
पानसूलगुल्मकामलहरनपां
डुरोगकरहानपर अथमहिषीमू
त्रगुणं महिषीछारकषायपुन
कटुतिक्तहीपुनिसोइउदरसूल
मेदीमहांपांडुकफुपुनसोइ अथ
मेडमूत्रगुणं मेषमूत्रपुनिअति
कटुकनाकोकरैविचारनीदेसा

४ उष्ण कगेर अग्नि ववे सी कर संहार
५४ अथ अष्ट मूत्र गुणं उष्ण लउद
र भेदी महा पित्त को पवन सो इ वात
हरन तीक्ष्ण लाम हा अष्ट मूत्र अस
सो ई ५५ अथ उष्ट्री मूत्र गुणं रूक्षा
क्ष म दन्तु हरन हरै कुष्ट उन्माद
उष्ट्री मूत्र पुनीत सुन जो षधम हि
मा आदि ५६ अथ गर्दभ मूत्र गुणं
तैल जोग उचित महा उन्माद कुष्ट ह
र सो इ स्मार तिन्ह कुष्ट को सुनो गर्दभ
मूत्र असुहो ई ५७ अथ नर मूत्र गुणं
द्यार कटुक पुन मधुर लघु नेत्र रो
ग अभिराम नर मूत्र दीपन श्रम ग
कफ हरन ताहि शत्रु काम ५८ अथ वृ
षभ मूत्र गुणं वृषभ मूत्र क्रमि हो
य हर काम लगत हरणी सो इ अग्नि दी
पपाचन श्रम ग वृषभ मूत्र अस हो
इय ५९ अजा मूत्र गो मूत्र सम दो
उ बात नक्र कुताह तैल पाक गो मूत्र स
म मूत्र जु भेदी ताहि ६० अथ तैल गु
णं दोहा वात हरन पुन कफ हरन
पित करन तिल तैल बल पुष्टि
अरु कांति ना उष्ण स्वभाव जु ते
ह ६१ पित हरन कफ वात कृत
उष्णा दिक के सेवट दहु पाम हि
चर्चिका सीतल सार सो ग हे अथ
रवंदंड गुणं र सरन उ नै स बल
करन स्वादु संजीवन सो है ४

रक्तपित्तपीनसहरनसंतर्पिणा
निसो है ६२ सिद्धमिश्रअमृतमहा
रैतत्रिलोचनहो है वहन करन
पुनकफकरन मेत है वृष्यपुनसो
है ६४ अथ स्याम बैंडा गुणं कस
है स्नुपुन स्वेत सम दाहहरन अभि
राम वहनकरनपुन कफ करन
कहो है स्नुपुन स्याम ६५ अथ शाक
वर्गः अथ करेला गुणं वातहरनपु
न कफ हरन उश्नपित्त कौ कोपक
कफला पुन रूचकरन पित्त निवार
न सो है ६७ कंदूरी अद्भुत रूचिक
रन बुद्धिनाश करु होइ अथ कु
मंडा गुणं त्रिदोष हरन रोचक
विमलपाचक मधुर पवित्रक
कोटी पुन मल हरन सदा पथ्य
पुन मित्र ६८ अथ तोरई गुणं तो
रई है पुन ज्वर हरन पित्त हरन
न है स्याम त्रिदोष हरन पुन शार
द जल रूचक जीवन राम ६९
अथ पलवल गुणं पित्त वात क
फ कौ हरन रोचक परम पवित्र
हरित कहो पुन ज्वर हरन शाक
न क वित्र ७० अथ वर्तांक गुणं वैं
ताक स्याम संदर सम गन शाक विमल

५ 5 अभिराम द्रष्ट कारन छुधा बढ़ै क
है क्रोध अरु काम ७१ स्यामकासउ
न वात हर रोचक पाचक सोई अ
मृग अद्भुत महा बृत पूरित स
व होइ ७२ अमर कंद गुण कंद
शाक सूरन गुण गने सो शाक न हो
ई पाचन अरी दुख गुल्म हर प्लीह
कुष्ट को सोई ७३ रक्त पित्त निंदृत
महा हरि न बचन सुन लेइ अमर
कंद को गुण महाय है औषध को
सोई अथ बथुवा गुण पित हरन
कफ वात हर रोचन पाचन सोई
शूल अफारा कृमि हरन अग्नि वृद्धि
करन सोई ७५ उदर गरिष्ठ ताको
विमल ज्वर ताको मर्जे ना रय ताको
पान जो कर न ही उदर रोग मिटजा
इ ७६ अथान्न वर्गः रक्त शालि को
मल विमल त्रिदोष समन अभिरा
म कछु ग्राही पुन बल करन शी
तल यव श्री नाम ७७ अथ गोधूम
गुणं शीतल मधुर पुनि विष हरन
अल्प मेद कछु होइ कछु रुक्षी व
हती फल विनिवारति सो इ
चणक ७८ अथ गो[illegible] गुण सीतल पाच
न कफ हरन पित्त समन अभिरा
म कछु रुक्षा पुन मल हरन च
णां पालं का काम ७९ अथ मूंग गुणं

५

कफहरनापुन कुषकारनकुहं
मंगीकीबातपुष्टकारनपुनिमलह
रनपथ्यदियेज्वरजात ८० अथउ
वगुणं नवसीतलपुनकफहरन
पितहरनसबसोइकछुगाढीअरु
धातुकरपवित्रयहपुनहोय ८१
अथतंदुलमांडगुणं तंदुलमांड
उतारकै मूत्रकछुप्यावरोचकत
र्पणालीडियेबातहरतहैनाव
८२ महाअग्निजातहैमूत्रजरो
धप्रमेहरहहकोमांडजुदीजियेआ
नकहैयोहैसेय ८३ अथपथ्य
देनेकीविधिः प्रथमजामदीजे
नहिंलघनदूजैजामदूसरजाम
जोवलहरनप्रथमजोआवैजाम
८४ अथखीरगुणं गुरुविष्टभ
पुनकफहरनपितसमनअभि
रामसलकर्त्तारोचकमहाअग्नि
यसीताराम ८५ इतिश्रीअमरसिं
हविरचितेअमरविनोदेभाषा
निर्घंटमतेद्रव्यगुणाधिकारः १
अथशकुनपरीक्षा चौ० इमेदीम
दंगमृदुमर्दलआवैकन्याअरुगो
वत्ससोधावैमीनयुग्मअरुदधि
पकवानाविप्रतिलकमरववैलैआ
ना १ चौ० यवतिगोवीलैआवै

६ अग्नि निर्धूम महासुख पावै असाग्नि
6 अरू कांसकूं पात्र गोरोचन असुरी
अरू जानत्तार वृषभ जोट लौ आग ऽ
वैभ रोकुंभ महा रोग नसावै वीरता
भैरके तक त्रांरवर मान राजावैरुपा
गृतेजान ३ गृ ते आदित्रा कुनैम ले
चलते मरते आगे मिलै वैद्य आवै
त्रिषके घर बार रोगी जीवै सही नि
धीर ४ अथ ज्योतिषमते दोहा ल
ग्नतै रवि भौम ही सप्तम द्वादश होय
अष्टम गै जो चंद्रमा मरत्तु जो निश्चय
होय ५ चंद्र संग मंगल परै अथ
वा सूर जहो इ रोसा दोष जु देषिजै
यम कंटक पर वैसी यह सूर्य लगन
पर देषिजै सप्तम स्थान जु चंद्र ता
न काल रोगी मरै ज्योतिष माषैनं
द ७ इति ज्योतिष प्रसंग अथ वालचि
कित्सा मा नू दोहा घाटी नासस
की रहै गुदी गय जो होइ प्रवरा
जो को मल जानिये ताको घाटी
होय ८ अथ ताको उपाइय दो
हा बंवई माटी आनिकै वछबावी
ज जुलै इ पुरान गुड मेलिकै ता
लवै ऊपर देय ए पात आक कै
मध्य कै चोपर घीव रष ३ नहीं का
काढ कै ताता बीवे ३ चौप ६०

पानीको मिलापानी लेइ बालिकी
समसंधिमैं देइ न खबी सौ को तो
तुम लावो रंचक गूकको नासहि
पावो मूढ अंग्र खशिर सी धार खो
कहै धनंतर छाटी मा बेपछा
टी गजा मसानअकारा जोगनी
दूध दै दे गई मसानमृगिया मसा
न कुचिया मसान गजा दोहा कान
न मैं अरूक लमलीडढ हार अरूपा
व बालक कौ यह रोग है ताको गजा
है नाम ४ ताको उपाय चौपई बौ
ऐ दिना नास तुम देइ तातेपानीक
छु सेम लेइ नवनीर अजवायन
लेइ ताको तुमही नास जो देइ ५ दोहा
अधीमिरचरलायकै ताको दुट्री
देइ जानसो देवहि नास अनजा
न आवैपास अथ आकासपरी दोहा
जाकी दृष्टी आकाश कूं कंपै शिरअ
रूपावन नेत्र श्वेत जो जानियै परी
अकास सुभाव अथ तिसका उपा
उ चौपई सबासेर गेहूं तुम लेहि
ताके मध्य विराजै धरै उसात वता
से तामैं धरै आकाशपरीका मय
मत करै हांडी बीच धरै धार मांहि
सात भांतकी योगिनी जाइ हि एक
सराई कोरी लेइ दही भांति ता मध्य
धरै इक पाल छुवाय मुंडे लीराबो

आकासपरीकाभयमतभावोसा
तपलीतेदिनमेंमालोकोरीदीवे
सीसोवालोकडुकतेलदीवेमेंदे
हीनासेरोगफिरावेनाहीलिखके
रयंत्रगलेमेंराखैनासेरोगघानंतत
रमबै अथयंत्र १८।८।२।४।२।४।२॥
अथमृगियामसानचौपईप्रथमजु
रकीआभाहोइपीछेजीवबुराइहो
यजीवाकेरमुखआगेमगताको
मृगियामसायनलागनेत्रकेरडो
राबैपसारभनैघनंतररोगअपा
रताकोउपायमिमलागूकडोपक
रमंगावैओहोनजलकीयंत्रलि
खावैमंत्रलिखायगलेमेंराबदिजा
यरोगफिरआवैनाहीचारहाथक
पराजुमलेडुताकेचारोंरंगकरेहु
नीलापीलास्यामसुफेदसमपुरी
कारावोभेदसतसिरसाहुसीराव
औतरीजायफलतीनलोगदरेवा
हरीअथयोगिनीचक्रेमहदीकुं
कुमचूरीपेबगाइघामाहिआष
करदेबलहुंगांनवष्टहवालकजाग
तबिललायमाकादूधनपीवेसा
यतिसबालककाकरोउपायघ
नंतरकहैचक्रफिरायउपाय
कुंकुममहिंदीओलऔवीरतरनाच
रगालावोचीरजलकेंनिकटजुले
केघरेतनबालककीआसाकरे
अथगमेंहुयेहाथपांवछुटजानेकाउपाय

चौपई जातन जा और वेवी की मांटी
तिस पाहो कर उलटी चाकी तिस
का पुतला तुम कर लेहु नेत्र माह
दी मोती देहु कच्चा कर नास ताके
क ७० चार लौंग अहुती नौमे बचा
र ग उ कपरा चारों रंग ताके मध्यना
रायल संग सात कूप का पानी ऽऽ
वै सात रूष की पाती जानै नदी ता
ल कै निकट जु धरै सब सामिग्री
योगिनी मरै इसी रोग का यही उ
पाय कहै धनंतर रोग नसाय अ
थ मृतक मसान दोष हो तिन्हि या है
य अथान सों मृतक दृष्टि पर जा
य बालक छाया जानिजै ताकौ क
रौ उपाय हाथ पांव सूके रहै मु
ख बेचेल होय दाह ता बालक
छाया हु ई और व्याधि कहु नाहि
ज्वर नाही सूकत रहै ताको दूषम
सान ता कौ छाया जानियै मनै ध
नंतर भान ३ चौपई कर वट नैन
मूंद कर है इहु पकर रहै नहु ही
ले ही और रख मूंद सोवै मसान यो
गिनी चक्र मारै मै दान ४ दोहा
मृत्यु मसान जो जानिये ताकौ क तेप
रौ उपाय बिन उपाय असु होत न
है बालक मरजाय उपाय चौ
पई चार हाथ कपरा लेहु ई ताके
चारों रंग करे इ सात परी दाख सिर साही

सातनाडुकी रिवचरी ल्याइजाय
२ फलतीन लौंगदस घरीइसवि
४ धकाडुकरोनरहरी जातनाडुका
पुतला करो सबसाम ग्रीहांडीघ
रोवारफेर गाडो जलमांहिसात
सेबकरकी लौ ताही उतम मसा
न अतीतमसान तीजौ लागेकु
छमसान पुमसान भुगतै हैं देह
जब लग बालक नुरतमेहे इ
तिनि नाबामसान चौपई पहिलै
बरत उतके करै तापाछै होयघरका
मरै वै घटका बालक पर है इउ
तपित्रयह विधिहि करै हौ तीन
अतीत जिवावै चार चौंसठि जोगि
नि मंगल वारवटी गर्भ की रछा
करै सबसमानकी यतै मरै अछ
मसानपीपलकी सेवमहावैव
पर्थिवकी सेव इस विधि गर्भ की
रछा होय जीवै बालक मरै नसो
यजंत्र लिखियगले में वांधैका
म छाडके नित्यप्रतिहो वै अथ
मंत्रनागेकाउंसत्यनामादेसगुरु
कौ आदेस थंभहोत भाव गर्भ थंभै
गौरा पार्वती माताकालोद्रहौंकर
पिताकाविंद समुद्रमैं छार करै
लोहेकौ डंकराव जोके वाराइ
सीगर्भकी रछ्या करो गुरु गोरख
नाथकी आन मेरी भक्ति गुरुकी
शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सातवा

र मंत्र पढ कै गुरु कू गाढ दे ई १ दूसीत
रियां स्यात गाठ दे ई घूप दे कै कू
ग बांधै भ गर्भ थंभै इति गर्भस्तंभ
न विधि: अथ कोप मसान औष
धि हूलन द पूर्वी ५ मोथा र कुरा
सानी अजवायन १ सौंचर नून ४
गुड ५ पैसा नाप बडी झाडी के बेर प्रमा
न बांधै इक्कीस दिन दे १ अथ मं
त्र मसान नामा दे स गुरु को हो हनुमा
न तेरे शिर पर भूरे बाल कहां ल
गाई बार काली वि छ्री लाल प
बान दिस चेट आई सीतला मसा
न सोहनी मसानी रोवनी मसानी
कहे डिया मसानी उठ किया म
सानी छूलिया मसानी कुलेजा
पेट मसानी सोई सोई आवै सोई
सोई जावै सोइ सोइ हनुमान बां
घ कै लावै मरी आवै रीती जाय
इस पिंड की हनुमान करे सहा
य मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मं
त्र ईश्वरो वाचा अथ सीतला यं
त्र दोहा तन मन ह्री भारी रहै पी
छे सूकत जाय विधा दूरो ह्रोवै
दही गदारा करहै जाय चारों ल
हे सादि बके त्रिहा स्वेत रहा यति
से मिना बाजा मिथै मुनिवर दियो
बताय १ अथ मिना वे पारा औषधी:

१९ चौपइ सठी चावल महि दी मिजावा
९ वै प्रात काल मिलि पानि पावै सी
पी दोइ बालक को देर जाय निना
वा धन्वंतर कहै ई मा खन घी अजा
ल्हूना खाय बालक को देहु बौ द्रुन
सुख पाय ॥ अथ त्वा पर औषध ॥
कूटे इ यन पत्र जल सो ज्वर जाय पा
गंधक वाय विडंग विष्का वकर्स
मिरच तु क संग पुनः चौपई अज
पाल सो धेदूद ३ डे आने चार चारटं
क कहै प्रमा नै गंधक तुके ताव
दि वाई विबहु चौगुणा मिरचा या
ई थोर दुगध पुट देइ पिसाय गुट
का चणो प्रमाण बनावै उसनी र
सो प्रात जो खावै उदर पीर पीर हि
न मैं मिट जावै पुनः अजैपाल टं
क २ गेहूं टंक ४ कूवार के रस मैं
गोली करै चणो प्रमाण सीतल
जल सो देइ ज्वर जाय ॥ अथ ज्वर को

३	२	३·	११	+
७	७·	५	१०	×
९·	४	३।	११	×
२	१०	७७	०६	×

कडुअ सिंगी करा
पती सब बालक को
दीजे मधु में पीस
जा पति जाति सह २
बी जाय अतिसा
र छिन मैं मिट जाय कफ ज्वर भी
जाय सत्यं ॥ अथ अतिसार भी होइ ही
पाखाण भेद ॥ अन्न जाय फल तेंदू ल
जल सो देइ हु थिर पै न तनकाल है

वहुसुखपावैपुनः विल्वयुःकथपु
नधानुकीअजमोदाकल्ककरै
१ अतीसारछिनमैंहरैअनिसु
खपावैदेह अथज्वरातीसार वि
ल्वकथाधायकेफूलइंद्रजव
चिरायतातूलमध्यसंगवालक
कोदे २ अतीसारजायज्वरसे १
अन्यच सांईपीसमासा छोहसो
देई अतिसारछिनमैंहरलेई अ
न्यच काकडासिंगीमोथाकराप
तीसएककत्रकरसहतमेंचूर्णकर
चखैसयीकीहानीहोयअथ
वालककृमिलक्षणं चौपई ता
पहोयपुनिउपजअफाराफूलहो
ये २ अतिसारविथाउदरकिर
मजानियेसोयछरदकिरमलद
रायेहोयजिसकाउपाउवायवि
डंगासौंधाजवाखारकरेलाहरड
लेपनि घीग गजतनकसौंवाकेउ
वहीकृमिकानासकरैयेतवही
रावीकोगुडखायदिनतीनघतत
रकढैजीवकृमिहीन अथवाल
कीजन्मघूटी लौंगटंक १ करद
लाटंक १ वायविडंगटंक १ इंद्रज
वटंक १ निसोतटंक १ त्रिकुटाट
क १ हरड टंक १ जीरास्याह टंको १
पीपलटंक १ केवलेनटंक १ ज
वाखारटंक १ चिरकीवीट टंक २

जन्म घूटी कीतरै हे ६ उदरके सम
स्तरोग जाय बालककी वुद्धि पर
नेत्रयन पुनः फटकरी मूल ले
६ मासा २ अफीम मासा २ गऊका
घृत ले ६ तिनैमेस मैं लोहे के
पात्र मैं रगडडै जब स्याह होइ त
व नेत्र पर चोपरै लगावै पुनः
चूल्हे की माटी मासे २ कडवे तेल
की वूंद पीतल के कटोरे मैं वास
से रगडै जब स्याह होजाय तब अं
खौं मैं भरै इति बालक चिकि
त्सा ८ अथ पुरुष चिकित्सा या
नाडी परीक्षा चौपई कर अंगुष्ट
के मूल विचार घबरि डीवसा
हि निरधार ताते सुख दुख कू
रौ निरधार पंडित तिनै यह करौ
विचार इडा पिंगला सुखमन तीन
प्रकार कहो गही नमा सर्प जलो
का मारहत तिही कुलंग काग मैं
ड्रक गत चपि तही हंसा रावत स्मै
षमा जान लवाती तर सन्निपात
व षान कफ वहु कवेग वेग होय
कफ वहुक होय दोष नाडी गतिर
मह कर ३ अतिजो हीरानाडीग
ति होय निश्चै मास घा विनाशै सो

इछ्या रकौ कोप च्युषि लिंगति चढै
काम क्रोध वेग बलितिरले ४ मंदा गति
हीणता बढै धातुहीणता याति
लेहै गुद्दता कौष्ट वेहगति होयगु
र्वेणि जाति रुधिर पुन सोय वेगव
तिनू धावब बान नैना सुखवद
लागत जान अथ नेत्रपरीक्षा १०
नेत्र जु इत्या शरीर को नेत्र क बायु
प्रमान नेत्र म २ छम्रु गत सवनै
नेत्रपरीक्षा जान ७ वौ ० रुक्ष वर्ण
धूम्रता सो होइ नेत्र स्निग्ध चंचल
ता सोइ नेत्र जु लेहे शावान सु ला
न नेत्र फूल हेम सुनासु जान ह
पित्त रक्त लवर्णता होइ ज्वर पित्त
लेहेशा जाने सोइ रक्त पित्त धूम्र हो
हाथ वर्णी कफ लेना नतीनों होय यही
वरमान पित्त धूम्र कफ वात जु ला
न स्वेत हरि श्रीक कफ पित्त मान १०
स्याम रंग को वन रंग होय स्व स्वेद ब
र्णि रक्त ना सो इत्रि दोष बोलन हूरा
जानो एक ताको महा असाध्य क
हेय अथ मूत्रपरीक्षा दोहा ध्या
र घडी रजनी रहे होगि मूत्र करा र
आद अंत की धार तज मधम त्र
ठह राय ११ स्वेत कां चमें छ्या चिरो
ग करो निर्धार नेल बुंद न हों मे हि

२२ ।। थै यही रोग कौ सार चौपई पीत
वर्ण पित ज्वर होइ स्निग्ध स्याम
वात करै सोइ धारा वत कफ कौ
परै तेहि मूत्र लक्षण जानौ गुहि
तैल सि स्वार्थ सत्यकर नितदो
ष प्रकार मानहु नन पित कांजी स
मान मूत्र कौ है ब स्रे आगा याकौ
यही विशेष पांडुर स्रे अपित
कौ जान स्याम धार सन्निपात ब
खान दीरघ रोगी रक्त अकार कफ
जहां तहां मत्य प्रकार कांजी निंद
स मकार से लेप वरम पार कौ यही
विशेष रक्तवर्ण मूत्र जो होइ अति
सार व्याध कहै सोई वाय स्रे आ
व सा आकार न कन तुल्य तां कौ विं
धां ता केवल वर्ण मूत्र जो होइ आ
म वात लक्षण सोई घृत के वर्ण
मूत्र परमाना ताके हृदय जलो
दी [illegible] र जान कुंकुम पांडुर मू
त्र निर्धार वात ज्वर कौ यही है सा
र १९ दोहा ऊर्द्ध नील अधार
क्त ही रुधिर पित ता होइ बुदा बु
दा जा मैं जानि है महा असाध्य है
सोइ २० स्वेत मूत्र हो जास मैं मूत्र
अ डीर न जान कफ गुन ता मैं देखि
के सूद्यौ रोग उ न्मान २१ ऊर्द्ध रक्त

अथ पित्तही पित्त सूतावैना हि उप
जा हो वऋ दे पि थे सूधी रोग निहि
माहि चौपई घूम वर्ण जो होइ रुघ
राधिक केवल सूणाय है सोइ क
फ वर्ण मिल जु ता मै देष सन्निपात को
यही विशेष दोहा पीत वर्ण छाया
रहै कफ तु वा वुदा होय फूसत दो
ष जो जानिये यह संशय नहि कोय
सुरा पान सम सूत्र ही शाव गंध ति
स मोहि दिन जु एक मर जात है सं
शय नाही कोय २५ चौपई सूत्र
विंद्रुम घृत जिस देहि पूौ होइ कै ल
दोग एही कफ वर्ण जो ता मैं देष
दो दू कुष्ट को व्याधि विर्द्धि शोष २६
दोहा रक्त वर्ण अरु ल्लाष सम पित
प्रकाशै ता सगो सूत्र सम कफ सन्नास
न्निपात को नाश २७ चौप० स्वेत
वर्ण सूत्र जो होइ रोग तुय श्मा जा
नै सोई अथ मूत्र मध्ये तेल परीक्षा
चौपई पूर्व दिशा जो पसरै तेल क
ष्ट सा ध्य या को है मेल दक्षिण
दिशा मर तु जो धावे पश्चिम सुख वे ता
मन मैं राषे उत्तर दिग आरोग्य शरीर
ईशान मास मैं जम के तीर ३० अग्नि को
ण मि अथ पुनि मरै निरऋति कोण उ
म के फंद परै अथ नाडीपरीक्षा चौपई

१२ दोपपहर दिन होय निर्धार रोगी को
12 तहां करो विचार अधादूध पानी
जो मिलावै थाली में तल सूर्य दिख
लावै तब वह रोगी सूर्य को देखै
ता पर जीव नम तु विशेषे उत्तर
दिशा हीन जो देखै निश्चै मनुष्य वा
दिसम लेषै पूरव दिशा मास दो जी
वै दक्षिणा दिशा मास त्रय लेखै पश्चि
म हीन सूर्य यो होय मास षट पीछे
मरै सोय सूर्य हीन मृत में देखै
दिन दश जीवै मनु विशेषै वी च
छिद्र सूर्य यो मास दिना सात पीछे
जम सात ३३ सूर्य धु धा सा दिखै
रात बीच मर जाय ता को निश्चय जा
निये सत गुरु दिये बताय अथ दे
हल छाया दोहा उष्ण पित जो देखि
यै वायु जो सीतल होय रक्त स्याम पि
त जानिये अवर नहिं होय ३४ सूक
कंठ जो स्याम नाडि हा कफ विन कठो
र सन्निपात तुम जानिजों और रो
ष नहिं जोर ३५ अथ नेत्र परीक्षा
नेत्र बडे इस शरीर में नेत्र जु को पप घा
त नेत्र मध्य कर देखिये ति दोषन
सो न जान ३६ दोपहर सूदे वर्ण
धूमर ता होई दोष स्निग्ध चंच
ल ना सोई नेत्रा लक्षण गावा न जे ज्ञा
न गहीं लक्षण चौरासी जान ३८ ह

रिअ रक्त लछन जानौ होइ पित जो लछ
न जाकै हीये सोइ स्वेत वर्ण कफ तें
जान तीनों दोष अही पामान ३४
रक्त पित ऽ धूमलौ होइ वात पित
जानौ यह सोइ पित धूम कफ वा
त तें जान लेत हरित कफ पित मा
नें ४० स्याम रंग कंचन रंग होय रूप वों
वरना रक्त तासोय त्रिदोष जु लछ
णा जानौ गृह ताकू मध्य असाध्य क
हैय अथ असाध्य लछणं दोहा स्व
वदन अरु नैन जु हीं दंत उजले ताहु
हू पत्र सों मकार दे हिवियै णू लछण असु
भ ताहु ४२ जिव्हा कोमल सालना
कर पद उष्म जु होय लछन जा जिस
पुरुष के व्याधि मरै नहि सोय ४३
णू लछन हीणा घ्राण मलीन ता करि सु
गंध सुबास शब्द सुनै जौ करि हीं
नाही तासु विनास ४४ अमरः पतनु
र गंधता प्रकत सुभाव जु तासु जिसै
नहिं डर मरन को कहै जु वैद्य वि
लास ४५ ।। अथ असाध्य लछणं दोहा
हो वरणा हीन जिस के हिये जानत
लछणा गृह अंतर दीर्घ त्रण घनी वि
रस वदन होन हीं ४६ हिकास्वा
स नर षांषनी लोचन जौ के लाल
कंठ विषै कफ होत है निश्चय आयो
काल ४७ दंतन हीन कंपै जु तन अचवी

५

२३
13

लाहू जु देह मा सप्त क्तिमें रोगि जुस
म फंदू पर है नेहू ४९ अथ ज्वर नि
दान चिकत्सा मादू दोहा जब लग
शिर भारी रहै तब लगि ज्वर नहि जा
य शिर हलका जानिये तब ज्वर जा
य विलासय ५० अथ वात ज्वर ल
क्षणं चौपई वक्त्र कोप शिर भारी जा
न कंठ रूख अफारा मान कांपि
उठै नीद को नास बैर माव बकैहु
रव जासु ५१ बार बार जंभाई आवै
वात ज्वर माधव सम जानावै मुख
फीका शिर गात्र फिरायस बाअंग क
पाल होजाय ५२ नैना मूत्र रक्त पर ला
प उष्ण पित्त अधिक तो ताप खेद
दाह अधिक ता ताप का नो शब्द
सुनै नहीं कोई मूल गुदा विष्टापु
न मैं सोई कंठ अघार है कै अघमा
न मारू तणते लहृणमान अथ पि
त ज्वर लक्षण चौपई मुख क
ड़वा मूर्छा परलापप कै का न अ
धिक ता ताप खेद दाह अधिक
ज्वर रहै भ्रमन रसा अधिसाह सल
है ५४ अथ शिर फूटने का इलाज
नौसादर को पीस कै ताजी मट्टी भी
जी हुई में उस नौसादर को मिला
वै हाथ से लाचे घाकै संघै ता को
ला शिर अच्छा होय धिसा हसल है
५५ नैन मूत्र विष्टापुन पित्त लाल हो
ता सुनो पित्त कै मित्त सब कहो हो रा न

२३

वषानपंडितजननसवकरौवषान
५५ दोहा अंगहोइ अतिसारहीनि
द्राहु कोनाशमुखकारवामूर्छान
बाहाकहोइ पुनजानु ५६ कंठअ
धार नाशपकैफलापद्राहमद
शोकतृषाबानेत्रपीलाहैयहीपि
तज्वरदोष ५७ अथकफज्वरल
छनदोहा वेगसततआलसमहा
मुखपीरानुकफलेपदरोमहर्ष अ
तिनिद्रनाकहोयप्रेषमामेद ५८
हाथपांवभारीरहैतृषासीतकोद
हनाकवहैखांसीरहैऔरछिपा
खेद अथमाधवनिदानमतेचौपई
आलसनिद्राखांसीस्वासउछेपित
मूबकोनाशरोमहर्ष अतिनिद्रा
होयकटुकछुर्दमुखमीगाहोय
खिदहरखांसीमंदज्वरहोयनेत्रमे
दसेदहैसोयभारीअंगनीरसुख
वहै कफज्वरकेगुनलछनकहै
६० अथवातज्वरलछनसांदोहावा
तपित्तज्वरकोपहैतबामूर्छाअ
तिहोयकंठशोषकंपैवहुतअति
निद्रापुनिसो ६१ अथवायप्रे
माकौपर्वमेदज्वरभारीहोयजना
कवहैज्वरखांसीसोयकरैप्रस्वे
दमूबकोनाशअतिनिद्राआ
लसपुनिनाश ६४ दोहावारअंग
पनसोकटुरवनैनवरैनहिंचैनक

१४
14

कफ समीर ष्वर ।। काहे है । तैसो आवेसे न
६५ अथ श्लेष्म पित्त ज्वर लछन दोहा
दोहा कफ बढै दाह जो सीत होय पीडा सहा
श्लेष्म पित्त विकार ६६ सन्निपात ल
छन दोहा सन्निपात त्रिदोष ज्वर
लछन ताको कहुं विचार अस्थि संधि आ
न खस मै दाह ग्लानि इकबार ६७ शिर
भारी पुन होत है कफ नेत्र होवे लाल
तंद्रा मोह अज्ञानता कानो सुन ना तासु
६८ अनर्थ बचन जिव्हा कहै काम
स्वास पुन जान गीत नृत्य बोले विमल
सन्नि त्रिदोष बखान ६९ अथ क्रिया
चौ० ज्वर के आद क्रिया है गहे गाय रा
ख पुन लंघन देह तपु नीर बहु तन
हि होय दसा वा हार मध्यता सो ७०
दो० याते ज्वर घ और कहै मैं द्वेग
पुनि होइ तांको कहिये विषम ज्वर कु
रहै सो सब को इवे गव ह दिन दिन वहै
करै देह संताप वासी जल पीवै नही
पूर्व जन्म के पाप अकाल दिवस सो
वै नहीं मैथुन तज अभिराम समझ चि
कित्सा कीजिये करत नहीं वय आम
भोजन करन हि चीकना जब लग ब
ल नहीं होय यही करम सब मिट तै
सु नै कान दे सो ७१ अथ रक्तगत ज्व
र लछन सो दोहा अंग दाह थूकै रुधि
र छर्द मोह परलाप अंग सबै पीडा क
रै लछन रक्तगत ताप ७२ अथ मास
गत ज्वर लछन सो दोहा ७३ नौ रीत न छा

तौ दुरैवे सर्द नछर्द कोयहै अरोच क
सिर भारी रहै गिरै चहोय पुनता है ८६
अथ मांसगत ज्वर लछन तो होदुष
ताप पीडा बहुत अरोहित मूत्र पुरीष
उष्म ताप त्रिषा महाभ्रम नहु मांस
ज्वर सीष ८७ अथ मेदगत ज्वर ल
छन तो होइ तीव्र वेग मूर्छा महा प्यास
छर्दि गलन पान अनर्थ वचन बहुंग धि
ना ज्वर मेदगत जान ८८ अथ मज्जाग
त ज्वर लछन तो चौपई हिका स्वास व
हुत कफ होई बेलत मे घना दव ल
सोई अंतर दाह बाहर अति सीतला
लछन मज्जा गत सीतल ८९ अथा
स्थिगत ज्वर लछन तो चौपई विलास
प सर्व गात्र तह जान अस्थि मे दर्म क
हा बषान विरेच स्वास जा दिन तन
होय अस्थिगत ज्वर जानौ सोइ ९०
अथ धातु गत ज्वर लछन तो दोहा
धातु दग्ध दिन दिन करै दुर्बल हो
य शरीर सोष स्वास अति सार पुन
व्यापत नहीं शरीर ९१ २ इति
श्री अमर सिंह विरचिते अमर वि
नोद भाषायां सप्त धातु ज्वर लछ
णं ध्वनी योनाम ध्याय: ॥ २॥
अथ ज्वर विमुक्त लछन दोहा मुख
प कै छींकै विमल पाक तिचि कित
अभिराम विगत रोग कै दु:ख सब गत ज्व

२५
15

अथ असाध्य लछनं दोहा त्रिदोष
जानिये रोग है लिये उपद्रव साथ अ
ग्निमंद बिरलाप पुनि निर्बल तन द्रव
नि हाथ २ औषध कुमातै नहीं क
मै रोग न जानत सहि असाध्य लछन
कहे होय ऐ देह की आनि ३ अथ धातुगी
री ज्वर लछनं दोहा उदर पीर बल
छर्द होय तन ३ बिरचड कारं अजी
रण ज्वर सो जानिये आत्रमात मन आर
४ अथ मल ज्वर लछनं दोहा कंठ
शोक पुन दाह तन अंग अंग विरला
प भ्रम उपजै शिर ही मथा पूल दे
रा मल ना[illegible] प ५ अथ खेद ज्वर
लछनं दोहा अपि पीर द्रिस अंग
ही निद्रा आलस नास खेद बहुतं
माई पुन नयन पूल देरा ज्वर खेद
६ अथ द्वन्द्वगत ज्वर लछनं बरने
जो हृदय की नील तापी लै बर्न शरीर
उदर पीर मूर्छा बहु तन दृष्ट दोष बल
र पीर अथ रक्त ज्वर लछनं अंग
अंग पीडित रहै ऊर्द्ध होय पुन स्वा
स रक्त चलै मुख नाशते रक्त ताप
है नास ८ अथ पित्त ज्वर लछनं
पित्त तरबा। को बेग है पूर्व बात क
फ मान बात पित्त कफ जानिये बि
विध भेद हते जानिये अथ चतुर्थिक
ज्वर लछनं पित्त तरबा को बेग है
पूर्व बात कफ मान बात पित्त के
चौपाई चातुर्थिक ज्वर द्वितीये जान।

२

ठे घाते स्त्रे ष्मा मान त्रिरते वा तद
यतेहो इ चातुर्थिक ज्वर जानेंहै सो
इ इति ज्वर निदानं अथ वात ज्वर
चिकित्सा माह औषध दोहा अम
ता और गिलोय नागर चिरायता पी
स कर मूल दै य पंच भद्र क्वाथ कै
२ रहै यै वात ज्वर का नाश करै इस
थ पित्त ज्वर चिकित्सा माह औषध
पित्त पापड़ा नीव गलोय रक्त चंदन
पुनि धनिया सोठ मोथ कमत मेल
कर क्वाथ को पान हमा अस्त हि जाय
सब साथ पुनः सौफ मा० ५ को सनीमा
से ५ नीव मासे ५ मिश्री मासे २ पीस
जल मैं छान प्यावै पित्त ज्वर जाय
पुनः पित्तपापड़ा पास जल मैं छा
न प्यावै पित्त ज्वर जाय अथ कफ ज्व
र चिकित्सा माह औषध इकायफल
अरु पीपल कर मूल के सो सगीस
मकर चूल कुलीन मिरच और
भारंगी सह ते संग करी अब ले है क
फ ज्वर का नाश करे है ३ पुनः क
टेहली पुह कर मूल गिलोय संठ
पीपल मेल प्यावै क्वाथ करि दो
नाह कफ ज्वर छिन मैं मिट जाय
१४ अथ वात ज्वर औषधीः कौ
संठी मिरच पीपला मूल पीपल
सब सम कर लेय वातज्वर क्वाथ
दूनी मिश्री मेल साथ वात पित्त ज्वर

नुरत नसाय १५ पुनः पित्तपापडामो
थगिलोय सुंठी मिलाय ताकाक्काथ क
र लेइ वातपित्तज्वर दूरणमें जाय क
हैं धनंतर सुन पित्त जाय १६ अथ
वात कफ ज्वर चिकित्सा चौ० द्रौ
द्रादि क्काथ कर मधु ई पीपल को
कटु अंग ग्रीमे लेआवै वातज्वर जा
य पुनः मोथा सोंठि गिलोय नुम
लेइ वासा पित्तपापडा मे इ सहनत मे
ल करप्यावै क्काथ दूरणमें वातक
फ ज्वर जात १७ अथ कफ पित्त ज्व
र चिकित्सा धनियां इंद्रजव नी
ल पटोल सौंठि गिलोय नुमलेइ
वासा पित्तपापडा सौंई सहूत मे ल
कर प्यावै क्काथ दूरणमें वातक
फ ज्वर जात १८ अथ पित्त कफ
ज्वर चिकित्सा धनियां इंद्रजव
नील पटोल पित्तपापरा सम क
र तोल प्यावै क्काथ सर्करा पाइ
कफ पित्त का नाश करइ १९ अथ
थ त्रिदोष चिकित्सा माह त्रिदो
षपर औषधी नाहीं ई अस धन्य
हैं प्राणाहूं ता लंघन यमन उ ही
द क चतुर्थी शांदि इ अथ शीत
ज्वर लक्षण दोहा सीतज्व स गरे
देह पर पुनज्वर आवै भार मस
क पीडा बहुत कर शीतज्वर य
हजानत २० अथ त्रिदोष ज्वर ल
क्षण सीत जूस मी स मीर व ट हौ
स कांस कफ होय मूर्छा तें श्वास हि

कतात्रिदोषज्वरयहहोय २० अथ
महाज्वरांकुशमाहहरतालतव
कीसाधकैपैसे ४ पक्कैमरुमिला
केर १ थोहरकादूधसवासेरपका
हांडीकूजनतेरदेइ कपरोटीकेपि
रहांडीकेमध्यथोहरदुग्धमिला
वेहरतालमेलकैमुखमुद्रादेइहां
डीपेकपरोटी ७ देइसुकावैगीली
रहैनहींफिरहांडीकौचूल्हेपर
धरैअग्निबालैलकरीकीपहह
र ८ स्वांगसीतलहोयतबपीसध
रैमात्रारती १ मिश्रीमासे ५ षावैथ
डीपीवैमूंगकीखिचरीघीवदे
यसीतज्वरजाय अथमृतभैरव
ज्वरांकुशलिख्यते तथाचचक्रम
तेहरतालपैसा २ भरसोधीसीपी
काचूनापैसा ४ भरलीलाथोथा २
पैसाभरकूमारकैरसमैंखरलक
रै पहर ४ संपुट माटीकेमेमैलेक
परौटी ७ देइसुकावैसननमरहैन
हींगजपुटकाअग्निदेइ खुराक
रती १ मिश्रीमासे ५ देयपथ्यसि
खर [illegible] नेमातदेइ सर्वसीतज्वर
जाइ अथज्वरांकुशमाह सारा
वलीमतै सोर ३ गंधकसिरसा
हीमनसिलाकलीचूनागंधकमा
गनीलाथोथाभागद्वयरउलसो

२६ पीसविमागहांडीबीचगुटिकाघ
17 रीऊपरमुद्रादेइचारघडीपा
वकेकककरीसीतलमेंघोऊले
इतीनकसीसीरवडुहीरतीदोय
परमानउहेपातदेयनीरसोंत
दुलमथदेइखानमिस्नज्वरा
कंतराद्वितीयततीयचतुर्थन
रहायकहोज्वरांकुशरसश्र
निसतगरुद्दियोवताय अथ
ज्वरघ्नीगुटिका पारागंधकमी
गसंहरसुहागाचीतासाहतमाल
तुलसीदासमंगयडेरसआमव
जावेताल अथपुरातनसीत
ज्वरपररस अडेपालसोघेहु
तमासे१ गेरूमासे२० कडुमासे
२० कवारकेरसमैंखरलके
रैपहर४वटीचरोपमासाको
सीतलजलसोंदेरदिनदोय
रअजीर्णज्वरजाय अथऔर
सीतज्वरकाक्वाथ सुंगीमासे४न
रकाचूरहल्दीमासे४स्याह
तरामासे५देवदारमासे५चिरा
यतामासे४कटहलीकीजड
कीछालमासे५कुटकीमासे
स ४डबासामासे४नागरमोथामा
से४हतरपैसाभरपीपलमासे
४क्वाथकररगेरपीवैसर्वसीत

ज्वर जाय वहू त्रैदोष्टद्रादि क्काथ:
द्रौ द्राष धनियां सूंठ गिलोय यो
षा पद्माक वासा सोय रक्त चंद
न चिरायता ट१ दैष कर कंडु
२५ ईद्रजव लेइ नीभरंगी पर पट
लेइ क्काथ दे१ सव सीत ज्वर हरे१
अथ गिरानी का सीत ज्वर उपाय
सोंठ मासे ४ कुटकी मासे ४ हरड
मासे ४ अमलतास मासे ४ इनके
क्काथ पीवै गिरानी जाय अथ बो
ड भांग चेरांस सर्व ज्वर पर औष
धि द्रौ द्रा और धनियां चिराय
ता कंडु गिलोय पै षकर मूलं
रड कटैहली वडी हरड चूर्णी क
र उष्ण जल सूं दे य१ सीत ज्वर वि
षम ज्वर त्रतीय ज्वर जाय अथ
महाशीत ज्वर चिकत्सा माहू चिरा
यता पित पापडा नागर मोथा सोंठ
कुटकी पीपल मूल मुनक्का अ
मलतास है१ अजवायरा चार
चार मासे लेय क्काथ कर पीवै म
डा शीत ज्वर सर्वोपद्रव शांति हो
य सही पुन: पीपल मासे३ सोंठ
मासे२ गौमा मासे३ गिलोय मासे
८ डल८ अव शेष क्काथ पीवै महा

शीतज्वर जाय गिलोय मासे ८ ५
जवायन मासे ५ छोटी हरड मासे ६
पीपल मासे १ सैंधा लवण मासे
२ इन का काथ अथवा पुरनाक
र पीवै शीतज्वर जाय अथ शीतज्व
रे पूर्वसाधन माहे नथ्या चे औष
धि: सौंफ पैसा भर १ मकोय पैसा भ
र छोटी हरड पैसा भर १ बडी हरड
पैसा भर १ काथ कर पीवै पुनः पी
पल मासे च्यार सौंठि मासे ४ नागरमो
था मा० ४ चीता मासे ४ खेतचंदन मा
से ४ सम मात्रा लेइ काथ करि कै मि
श्री मासे १८ भर मे लपावै शीतज्व
र जाय तिजारी जाय चौथइया ज्व
र जाय अथ शोष ज्वर पर औषधि:
मिश्री तोला १ अनार मी ग तिस के बी
ज तोला १ काथ कर प्यावै शोष ज्व
र जाय पुनः अनछका दाख तोले १
मिश्री तोला १ काढा कर प्यावै शोष
ज्वर जाय अथ तृतीय ज्वर औष
धि: धनियां १ सुंठ १ गिलोय बस
मो धार रक्तचंदन काथ मिश्री सहि
त मिलाय कै पावै तृतीय ज्वर जा
य अथ चतुर्थ ज्वर पर औषधि:
वांसा आवलै कटे हली लेइ सुंठ
आवले काथ करे इस दन मेल मिश्री

कर ष्या वै चातुर्थिक ज्वर निश्चै ज्या
वै अथ विषमज्वर नाम संतत १ स
तत २ तृतीय ३ चतुर्थिक ४ शीत ज्व
र ५ संतत ३ सद्य जु मैं होइ २४ दूसरा
सतत नाम रक्त धातु में होय दिन ८
वा दूसरा २: तथा वा हर दिन पीछे आ
वता होय तो सतत ज्वर कहिये तृती
य त्व चा में प्राप्ति अथ चातुर्थिक अ
स्थि मैं प्राप्ति: अथ श्लोक संततं स
ततश्चैव ऽन्यो द्युष्का तृतीयकः
चातुर्थिक स्वरूपं चैव कीर्तिता वि
षमज्वरा ॥ अथ विषमज्वर परि औ
षधि: सार टंक २ सत गिलो टंक
२ पञ्जड टंक २ कव लगं [illegible] की गि
२९ रि टंक २ वंग टंक २ मौलेठी टंक
२ वंसलोचन टंक २ इलायची छो
टी टंक २ पीपल टंक २ सब की वरी
वर मिश्री सह तब अवलेह करै प
से २ जैसा बल देह है तैसी मात्रा दे
इ ऊपर बकरी का दूध पीवै ज्व
र खांसी स्वास कास सब ही ता तै रो
ग जाय अथ सीतोपलाद्यवलेह
मिश्री दो पैसे भर २ वंसलोचन टं
क पीपल ल्या थे ला भर २ दालची
नी मासे ३ इलायची के बीज मा
से ३ सार नो ला मिश्री वरी वर अव

१९ लेह करै मात्रा मासे ५ ३ यक्ष्मा जा
19 य मरखाय अजा दु ग ध सो है य ग
र है स्स पा दं ग दा है स्वास रक्त गा ड
यक्ष्मा जाय अथ लाक्षादि तेल ९
चंदन १ मोथा २ षस ३ नेत्रवाला
४ पदमाख ५ मुलेठी ६ कूट ७ म
जा ८ दालहद ९ कचूर १० इलायची
छोटी ११ धायके फूल १२ पीप
ल १३ नागर १४ लौंग १५ अडूंसा १६
नागकेसर १७ तज १८ तमालप
त्र १९ कवलगट्टे २० पितपाप
डा २१ बालछड २२ कंकोल २३
ए तेइस औषध मासा मासम लेइ
सर्व औषधि से तिलको तेल चौग
णा औषध मासा तेल तेवर ला
खला खवी परी वं र दही का पानी
लाष कारंग पानी मेल काढै सर्व
औषधि तेल पानी लाषकारंग
र लाय कै कड़ाही मेल चूल्हे
पर धरै अग्नि मंद मंद देइ तेल ज
बसिद्धि होय तब सी तेल करको
टे मर्दन करै दिन ४१ विषम ज्व
र जाय अथ क्षोषः फिर बालको
संठि गिलोइ काथ करै पीपल
मेल पावै आरोचक कासस्प ल
खा स मं. दागि दीन स ह रोग जाय
श्री क ज्वे रा हो लंघन कुर्यो ज्वर

मछे तु पाचने ज्वरे तेरेचनं कुर्या
ज्वरमछे कु मोजनं । बेहाल लंघ
न ज्वर के लंघन आदि हिम छे तु पाच
न दे ३ अंतनि विवेरेचनं करै ज्वर छु
टै पथ्य दे ३ अथ अजीर्ण ज्वरको औषं
धिः उदर पीर पर औषधि हो ताहि सोंठि
घानेद्दरली दिये सो दूर हूनी लै ३
देवदारु दखराइंक लेय कूकी पास
करै ३ उष्ण नाहि सो दीजिये दसज्व
र पाचन है ३ मल जो दूर्ष्य त्रिसयद्
तै हीन परै ज्वर सो ३ अथ बलवं
गदा लचीनी सोपक संचवन्तनपीप
ल है ३ निसाथ पुन संठि क्वाथक
रहे ३ अजीर्ण ज्वर सब दूर होय
अथ मल ज्वर पर औषधिः चौं०
किरवालातो लेमाषा दोय पीपल
मूल कंद ३ पुन सो ३ मोथे हरड क्वा
थ करा है ३ मल ज्वर काय यहा नाश
करे ३ अथ खेद ज्वर पर औषधिः दे
हानैल काय फल मेल के मर्दन
करै शरीर स्नान करौ दूल लप सो छि
टै खेद ज्वर जाय अथ दृष्टि ज्वर
पर औषधि मा दे मेडे की विष्टा व
छिया गं धक धनी दे ३ दृष्टि ज्व
र जाय नाश करै ३ अथ कर ज्वर
पर औषधि मा दूहे हा मी लै
सा ल है ३ कै हाय स कंय लाय

२० यचीतू कटंक बयचूणामिरारीपा
20 यसहतसंगयहे चाटि छैरकताप
मिटि जाय पमानजी ग्रलीजैठंक ब
यमीलैठीनामै ठानर चैर नचूराटं
क बय स्वासकास अरु पुनछार द
अस्तपाद अंगदाह हूसकीर सनाज्ञा
इहोइ स्रूल अरु छिमिव जायर
अथ सन्निपात ज्वर औषधि छीःका
यफल पीपकर मूल बयकाक
डासगी त्रिकुटा अजमोद कटेहली
कीजड चूरनकर सहत अदुकरस
पाय अवलेह करकै चाटिकै छैब
डाघडी मै सन्निपात हि को सबै स्वा
सकास कफ होयइ कंठ हैछुर ग
घुर करै कफ रोग मिट जाय पुनक्वा
थदसमूली सोंटी सबै काकडासृं
गी लैइ पोहकरमूल धवासा दे
इसं त्रिकुडा के वीच पचोल कडु
तैली डेपी सब अंग दाह ताग क
र सुं पावै काय सन्निपात ज्वर हो
वै नाश कासहदे रोग सूल पार्श्व
पीडा स्वास हिको छर्दि ग्लेहीग मिटे
जाय सब अथ सन्निपात चि
कित्सा माह अजवायन वच
[illegible]र पीपल ३ अजमोद ४
कलौंजी ५ कौडी मूनके सम लेइ इन

कीवरोवरकायफलदेइ कपरछो
नेसबकाकारलेइ घृ॥ सरीरमु
मलैमाहिपरहरैसन्निपातमिटै
जाय अथ महाभैरव घृ॥ संग्रहे
रजायपरछर गो१ मं गर२ बिला
वविडार३ मोरपंख४ मैनफल५
केस६ वांसेकीत्वचा७ बदरीकेस
८ छछियागंधक९ घतआकाक
१०वर११ करीकेरोम१२ कसरीछके
१३ मैड काविष्टा१४ सांप१५ब
घ१६ हिंगु१७ गवाही१८ मि
रचा१९ मोरकाचंदा२० बडकीउ
ठा२१ आरखकानरख२२ लोहवान
२३ जलमांसी२४ नागेकाविष्टा
२५ नरकेश२६ लाललमिरचा२७
मृतरवैरी२८ कलिरवानकी
ंछ२९ गऊकेश३० नकछि
कनी३१ समभागलेइ छोगम
त्रैसाविष्टा घृ॥ पचै३ सर्वज्वरशां
तिगरहदोष शाकिनी डाकिनीपि
शाचनी भूतप्रेत नश्यंति अथ ज्व
र मंत्र ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं सुग्रीवाय म
हाबलपराक्रमाय सूर्यपुत्राय
अमिततेजसे एकाहिकं द्वाहिकं
त्र्याहिकं चातुर्थिकं द्विज्वरं स
न्निपातिकं सततं ज्वरं नतसरम्प
रामासकं सांवतसरकं सर्वो नाशिं दि

छिंदि छिंदि भिंदि भिंदि किरि किरि सर्वा
न् ज्वरान् ग्रस ग्रस पिब पिब महा
ज्वरं भीषय भीषय विष्णु ज्वरान्त्रा
सय त्रासय माहेश्वर ज्वरान्निवा
तयनि पातय महत ज्वरे सेत ज्वर
ह्यपस्मारादि महा व्याधि नाशय २
सर्वान् दोषान् घातय घातय म
हावीर वानर ज्वरान् बंध बंध बं ध
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् स्वाहा २ स मंत्र
से इकीस वार झाड़े ३ सर्व जात
का ज्वर जाय इति श्री अमर सिं
ह विरचिते अमर विनोद भाषायां
सर्वसार ८ प्रथम ते ज्वर चिकि
त्सा नाम प्रतीयो ध्यायः अथ स
न्निपात निदान चिकित्सा माह अ
थ सन्निपातान् का नाम ते से ध्यक
प्रथम १ अतक द्वितीय कं २ रुग्दा
ह तृतीयकं ३ चित्तभ्रम चतुर्थकं
४ सीताग पंचमकं ५ तंद्रिक षष्ठ
कं ६ कंटकुब्ज सप्तमकं ७ रक्तष्ठी
व अष्टकं ८ प्रलापक नवमकं
९ जिह्वा दशाकं १० भग्ननेत्रएका
दशा ११ अभिन्यास द्वादशो १२ क
र्णीक त्रयोदशो १३ तंद्रिक १ संध्यक २
चित्तभ्रम ३ ए तीनो साध्य संनिपात
है कंटकुब्ज १ कर्णीक दोय २ जिह्वक
तीन ए तीनो कष्ट साध्य है रुग्दाह
दा

कर्णांतर: और सर्व असाध्य हैं अ
थ सन्निपातानां आयुर्वलं कथ्य
ते संधक से पूर्ण दशा वर्ष परिमान
दशा १ वासर अंतक कर हानि दि
वस २० बीसक है रुग्दाह पूती न
३ वर्ष प्रमान चित्त भ्रम जाय पर्य
न्तक १ तो जौन सीतांग प्रमाण दि
दिन पंच ५ वीस २० तंद्रिक कोष्ठ
न कंठ कुब्ज दिन १३ नेत्र हहोर
तीन वर्ष चित्त भ्रम है जो इ तृतीय
३ मास कर्ण पुन सो ६ भग्न ने अदि
ने आगमै होइ अभिन्न्याप द्वा ५
ण क पांरि मान सन्निपात आयु
रे जान अथ संधक सन्निपात
लक्षणं दोहा ७ दर फूल बाइ
श्रुत न होय जो कफ की हानि सं
धक पीडित रहे संधक तहां
व बान १ अथौषधमाह रायस
ना १ चीता २ त्रिफला ३ सुंठि ४ स
तावर ५ देवदारु ६ सर्व औषधि
सम मात्रा कर के क्वाथ देइ क्वाथ
मैं वक ३ गूगल मेलै यतु ईशां
त्रा कर ताकौ प्यावै रात्रि कौ अगि
पर सेकै संधक सन्निपात जाव
जाय अथ आन्तक लक्षणं दोहा क
रूखा होवै बदन अति ज्वर हो नेही
मूर्छा अधिक अरु अगिन तन
कर बहु रोवे रहि को है अंगवेदन

करपीव अंतकजात नगुतनेक
रहि अथौपायमाह अथसन्नि
हलक्षणं पवलन अग्नि अंगन
नहोइ नरमा घासमूललेवै ले
अरुसोइउ चुरमांकूठ अगेनके
ह मरहे अरु प्यास अति लक्षणा
रु ग्याह के पंडित करो गषानस
न्निपात हुलास अथौपायमाह
सेहा वेरीपत्र चंदन समैरोठगा
गमिलाय पगही लेपन कौद्रिय
अरु रुग्याह मिटाय २ पुनः वंस
लोचन २ सत गिलोय २ चटती स
कर विधिपाय सर्वरी भुनाय ज
लेप्यावै अथवा वारा तूलउस
कर प्यावै कांसीके कटोरा मैं जल
मेलकै नाभिपर राषै वेरी वकम
रु चंदन लेप करै उसै कछु
नहि देहि पुनः अथौपायमा
ज्यौ कौ मरसावेरावृडीके पत्र औ
घसेर गुरु मटका मै भरकर जल
का अग्नि पै पकावै जब मटके
का जल आधा रहै तब छानक
र नांद मैं ठंडा कर कै रोगिके च
रनरा दोनों हाथ के बडी चार ४
कर ग्याह मरसा म जाय सन्नि
पावसीवा करै अथ चितभ्रम
लक्षणं श्री स पीडा भ्रम उन्माद अंग
दे

बिकल होय गावनादि अज्ञान ताने
त्र बिकल नेट ही होय है सो वके ज्ञन
जानैनै सोई अथो पाउ माह पित
पापड़ा करवै देवदारू दाष चिराय
ता मोथा सार हैं डु ए लवा अरूफल
रवाला क्वाथ दे ई सब मिटै ज्व
ला अथ सीताग सन्निपात लक्षण
माह रोम हर्ष सीतल होय देही स्यां
स कुड चकी रकासी सोइ अम्ल वच
न बहु कापै देह कलम लाय अ
हा मा सोय अथोपाय माह शाल
पर्णी पृष्टी पर्णी कटे हली होनो
गोखरू बेल गिर आरणी करवा
ला पटोल कुमार दशादशा मूली
क्वाथ कर पावे सन्निपात ज्वर
जाय अथ कुंकमादि बटी अकर्क
र २ सुंठि २ लवंग ३ केसर ४ जाय
फल ५ जावित्री ६ पीपल ७ कस्तू
री ८ पान ९ नव औषध घी के अ
कर कके रस में खरल करै चो
मासा गोली करै घरै पान मैं
गोली खावै सर्व सन्निपात ज्व
र जाय केवल कस्तूरी चावल
हो भर पानके रस में देय तो सी
ताग सन्निपात जाय अथ सीता
ग सन्निपात का इलाज विधि:
कटेहली के फल पके का रस

२३ अहपीपलसौंठिआदेकरस
23 मेंपीससुकावेपुटसातकाकै
सुकायधारैसन्निपातकूनास
देइवार२१सन्निपातजायपुनः
कालाहिरसअहदेसवाली
हूगोंकेवीजकालीमिरचमैघा
लनअदरषरसमैंपीसैवार७सु
कावैचणामात्रगोलीवटीकरकैसु
कायनासैद्व सन्निपातसीतां
गजायअथअंजनसन्निपातप
रत्रिकटाकरंजवेकीगिरी२
त्रिफला३देवदारु४सैंधानूव
पपांचाकोसममात्रालेइपा
ल वरकालीतेसोंकेरसमैपीसके
सुकायलैयाकिसन्निपातकी
अंजनकरैतद्रूकदोयअथनाडि
कसन्निपातलछिनबहुतनि
द्रानषावैदुतहोइज्वरअति
व्यापहोइतिसमैरडिव्हास्वेत
कठोरअतिकांटेतद्रूकबहुत
कलमलोवांदेगालेदककर्णी
पीड़ाअतिहोइसहीनतद्रूककेल
छरासोइतथाऔषधिःह
रडवांसामूलमातुगीनागरमो
मतासमकरचंगीपीवलकेलै
जीकाघपावपरमसुखहोवेगात

अथ कुकुमाहिवदीदेय अथ
कुज्वकुसंनिपातलदेसांदेरह
ठंबकर अज्ञाननाशिरपीडुम्र
हकेराबायग्धांसबकबादहै ज्व
रदीरह भमसैर अथौषधविकु
टात्रिफला समकर लेइ इंद्रो
वनाहृकुटकीदेइ नागरमोथा
क्वाथकरदीजै कंठकुज्वरक
रनहीहोजै अथकर्णसंनिपा
तलदेसां पलापदाहस्वासज्व
रहोइ ज्वरकर्णमूल जोनिक
सै सोइ कर्णक मूइ कर्णहोय
जाय तूले ल्याकुर्णकैकमाय
अथौषधपाठपरहै दो र० रुफजुलो
काकादिकेकरीमूलहरहरदइनी
बरलजमनसबनाकरहे ऊपरलेवी
देइ अथ क्वाथमाहै दोत्रायस
नामोथाहरड्कुटकीऔषधपीव
हकर मीरंगबावचीफगीभाड
जीबादरायौषधिसमकरलेइ
क्वाथकरै रोगीकोदेइ कर्णकस
पथऔषध लेइ अथ कर्णमल
रीरहलाद्यपधि कुटकी१ कालीजी
कायफल लेइ वी३ ब२ सौ बप
खपराः लोइ अरंडकीजड७ विस
विसलेना२ कटेहली४ केबला
शऔषधी अजा... मि... लिहा...
...धम्मैपासेज

२४ 24 अथ वागरम करै मुदर मुदर मैं ल
गावै कठ्ठरी मूल सोथ जाय अ
थ मगन नेत्र सन्निपात लछणं
ज्वर अधिक ताप मन ता होइ त्या
स अगन नेत्र ता अरु सो इ अहीनेता
साथ भ्रमता होइ मगन नेत्र लछ
णा सोइ अथ औषध लिखते
सोंठ कट त्रिफला हौद्रा लेइ प
थ तोल हरि काथ करे सन्निमु म
गन नेत्र है इ अथ ऊरु घाव लछ
णं दोहा रुधमोह अरु मूरछा ता
हि को अफरा होइ पडि रहे सास
भ्रम त्यास ही ने नु भग इ लता सोइ
अथ औषध मोथा पथि अरु पद्मा
ख मल या गिर मौले ठी ना भम हु
औशिर नेत्र अरु वाला चेदन र
क काथ कर करलो लं अथ प्र
लाप सन्निपात लछणं कंप अ
धिक ताप अति स होइ अंग अंग
बुधि नासै सोइ मरै पीडा व कै
अनंत जम के मंदिर जाइ अंत
अंतर मते उपाय न करै असा
ध्य है दैव योग करमान के मू
ली को थ अरु देइ अथ बालु
के माहि वटि अथ लेकर कलेवं
ताप अधिकता त्यास करो र
जिह्वा कांटे बहुप्रद होय गरसा

निद्रा बहुत आवै विकल अंग
होवै डुकला वै अथ गोपाल कूटकी
पीपल करमूल कटाइ रास नागरु
वी भारंगी भाई वासा मोथा काक
डासिंगी देवदारु इन्द्रजव चेन क्काथ क
र अंगी अथ अभिन्यास सन्निपात
लक्षणं असाध्य होइ है वात पित
कफ को पर ही मुख डोलि चिकना
अंति श्वास होइ पवन लगा जाके नी
द अधिक मुख अंति अभिन्या
सत्रिदोष भेद लहैला करै अ
तापाय अथ आय मान और दशमू
ली अरंडे डौड और भारंगी अम
लतास वासा साठी ले इ पुनर्नवा मिल
क्काथ करे २ अथ अमृत संजीवना
रस: त्रिकुटा टंक ३ मीगा टंक २
कौडी की राख टंक ३ तीनौ औष
धि सम कूटकर पीस घर स
नताकरे १ तथा बकाथ: केस
र २ लौंग २ अकरकरा ३ त्रिकुटा
मुलेठी ५ भारंगी २ काकरासिं
गी ७ सब औषध सम ले इ मा
षे २ औषध का प्रमाण उलस
र २ मेल पकावै अथ व्याघ्रीष
रे इ बापु वौ दाषी ल्याय अथ महा
कि लेखसार सन्निपाते मारावंग
अहनाम अनूलोह अभक ग:॥

२५ गाजायफलसोइपारागंधकं
25 सैंधामीलाग्रहेअदैवाललौंग
अकरूसिंगरफअभ्रककसमकर
लेइवसलैतापुटदेइकीसरा
पुटदेखरलकरैनपकोरतोदि
यदोआद्रासोदेयअभिनास
सवदूरकरैइवाजचौरासीकि
नमैंदूरैयहऔषधिमिलैतो
कैरैमहास्वासपीडाअरुकासप
चकासकाककरोविनासकफका
रोगकोइनरहायअमरविनो
दजोदियोवताय अथडाढुबं
धहोजानेपरऔषधिः गडियां
८ सनधेलोमर१२ फैठ हिंगुआंडी
कीछालसहजनेकोरसमैंपी
सटिकरीकरगरमकरैतालवे
केऊपरबांधैताऊपरहिंग
कीखलरीबांधैजाडबंधीखुलै
अथकफकुठारेरसःपारागंध
कमनसिलजानसुहागाअकर
राजावित्रीजानवंगजायफललौं
गत्रिकुटालेयमसाननआदेसो
रसपीसियेगोलीउडदप्रमाण
संध्यासमैंतोखाइयेकफकोक
रैविनासकफकेसमस्तरोगसब
जायअमरविनोदजोदियेवताय

अथ मुख नासिका से रुधिर जाता हो
य तिसका उपाउ विधः नीव की
जड़ १ कूटी २ इलायची छोटी ३ कूटे
हली के बीज छोटे ४ चारों औषधी
सब मासे मासे लेइ गुड़ के पै साम
र लेइ तमाखू की तरह है मांडके हु
के मैं प्यावै रुधिर थंमै अरु होइ त
था च द्वितीय जतन प्रारंभः बाल
छड़ त्रिवर्षी गुड़ दोनों को एकत्र क
र हुके मैं पिलावे मुख से रुधिर थंमैगी
का होया इति नासिका दोनों से रुधि
र जाता होता तिसका उपाय हरी दू
व कू कूट लेके अर्क हरी लीजे छान
नासिका बीच सूंघाइये रुधिर बंद
हो जाय ४ । इति श्री अमरसिंह वि
चिते अमरविनोदे भाषायां संलिप
ताधिकारस्तृतीयः ॥ ३ ॥ ४ ॥ अथ
ज्वरातिसारे नागर मोथा आव ले
गीस ३ सुंठ चिरायता लोह जंगीस ३
२ जब मेल काथ करदे इसकी ति
सार ज्वर नाश करै ३ हीवेरादि ज्व
रातीसारे नेत्रबाला मुस्ता ग्रतीस
बिल्व नागर धन्य जगरीस आम
न चै फूल के टार अतिसार हरै
सब दोष प्रातःकाल जो प्यावै घा
थ हरै के रोग जाय सब साथ अ
धरतावली वही कर्न व्यतार सं

कुमारी मींगसार संख समसमली
डै मार टंक टंक एक सब पहि मा
न चार भाग अहिफेन समान घो
टि के रसमें मिलाइ कै गोली कर
घरै रती एक जव मदेसा कौं उप
ए अतिसार कू निश्चै हरै अथ पागंत
रैलावली वटी मिरच स्याह १ रू
मी मस्तकी २ अनार की कली ३ वंस
लोचन ४ हिंगु ५ मिश्री ६ आंब की
गुठली ७ लोध ८ बरैटी धाय के
फूल ९ माजू १० मोचरस ११ कुरै की
छाल १२ इंद्रजव १३ जायफल
१४ कीकर के फूल १५ जावित्री
१६ नागकेबीज १७ सबको सम मा
त्रा लेइ सबकी बरोबर पेठे की वि
जपो सतके रसमें खरल करैं कौं
कनवेर के बटी प्रमाण करा बांधे
चावल के जल सो इ पथ्य दही भा
त देइ सर्व प्रकार अतिसार जा
य अथातिसार चिकित्सा लदेशा री
रूप अफारा उदर पर फूल गुड
गुडाय पेड़ दुखै त तेल ह्याम चौ-
आम फूल विबंध जो होइ दीप
न पाचन गुण है पुनः मिरच अज
वायन मोथा जल में पीस पावै प्र
सारन स्तंभन होइ अथ रक्तातिसार

बेर १ लगिरि लोध्र ३ ल सौंफी सब पा
वै तंदुल ३ लैन पथ्य दही मात दे
१ अथ आमवेचकं क्वाथः नाग
र धनियां बिल्व गुलैर मोथा ने
त्रबाला ३ दे १ आम शूल विबंध
जो होइ दीपन पाचन गुण है सोंठ
पुनः इंद्रजव टं ४ पत्ती सट कु ४ वि
ल्वगिरि टं ० ४ लोध्र टं ० ४ रसौंट
नागरमोथा टं ४ ये औषधि सम कं
र क्वाथ करै गंडा कू प्यावै र तात
सार जाय ज्वर १ फेमादे थालैके द
स्तो का इलाज तथा च विधिः बेका ड़
दूध तोले २ कठगुलरी का दूध मा
सेर अंजीर का दुग्ध टंक २ इनती
नों को मिलाय कपरछान करै आध
गज कपरा पानी में भिजोय कर चौ
न र करे फिर गौ का दही तोले क
पराये चार अंगुली में बिछावे फि
र बीच में तोले ५ पोस्त का चूर्ण
कर कर बै फिर लपेट कर पुरता
करे गर मरा बमें रोगी को चार पां
च बार करा र खुशी लावै बालकों
का दस्त बंद होय पुनः तुखम
इसबगोल माशे ३ तुखम रहा
मासे २ तुखम बार तंग ३ इन को
मिलाय कै आधा कच्चा आधा
कटोरे में सेक लेइ कै बल ग मे
बती कै दस्तों को मिसरी के साथ तसोदे
द य

२८ 27 सदज्वरदस्तोकसूवकलामिश्री
केक्वाथदेइ अथवामूंजमसंदे
इ अथातिसारपर अहिफेनमा
सेजायफ॰ मासे॰ सौंठमासेर
तीनोंकोवरोवरअपकूंअनार
केवीडपीसकेअनारमेंभरेऊप
रआटादेइ पुटपाककरैफिरसी
तलभयेउवरोहोइतबवथकूलआ
टेकाऊपरसेउतारडालेफिरपी
सकरगोलीवडीझरवेरप्रमानव
नावैउलतंउलकेसेव्यावैपथ्य
नथांचांवलदेइ इतिदाडिमाव
टी अथगुटिकाजायफलकथा
खैपातीनोंवरोवरवेरीकेपत्रमेल
पीसेकौंकनवेरप्रमानवटीकरै
तंदुलउलसोंदेइ आमअतीसा
रजायफलप्रदमिमातरवावय अथ
संग्रहणीरोगलछनं सोरठा उदर
अमाचकहोइ अतीजोकंटककसाव
है वुधजानहिंहोयहढ़यावडु
न अतिरोवहै अथउपाउदोहा
प्रथमनरकसोंचल लेजलाहव
मिलेकरव्यावै एकडुदवओषध
घाअनेकगाउनकीएकसाउडस
षधिमाघनकरौसंग्रहणीनव
जाइउष्णोदकगधपीवैदिन४र
पथ्यमहूरकीदालचांवलनि

२८

घा भृंगकी दाल अरु चावल खाय
संग्रहणी जाय पुनः संग्रमिश्री मु
लतानी अजवायन दोदो पैसा भ
र २ सुंभी मस्तकी २ पैसा भर जावि
त्री २ पैसा भर इनको पीसे गुलाब
माद्ध खरल लै सुकावै मासे २ बुराक
प्रात सं खावै ऊपर अडाढ दुगध
पीवै अन्न मूंग पथ्य योगः अथ दोष
संग्रहणी चिकित्सा लिख्यते मा
हे तो ० पाठांगं धक अभक सार
नाम अस्र त्रिकुटा लै धार त्रिफ
ला मोथा आयविडंग चीता पीप
ल अरु लै संग कुटु चिरायत अरु
देवदार हलद जु दोनो अजु
मोदा भार सुंठ सु धनियां जीरा दो
नो सब औषध मिले कूटै अनो
सब तै अर्ध कीटी तु मिलाय अरु
गुण गोम रहित बाय विसखपरै के
रसकी पुट ३ दै २ खरल करै जब
तब सिद्ध हो मासे १ भर औषधि स
हत सो चबावै ऊपर अनादु ग्ध
खावै शरीर का सर्व सोथ संग्रहणी
जाय अथ संग्रहणी कपाट रस ग
प्रारंभ ते ० गंधक पारद अभ
क लै इ सिंगरफ लोह जातीफल
दे इ विख मोचरस मीमा लै इ पनो स

औषधानकीदेहीकोडाच्यनागर
डकथमोथाअडमोदलेइचीता
साथडाडमकलीटंकमसमजुन
तेहे कनककबीजअहिफेन गुली
जैपेगवीजकरंजवादीड्डे घनदे
रसमेखरलकरे२ मिरचप्रमान
गुटकाजुतेइ सर्वप्रकारकी संग
हणीजायरु धिरश्रूलअतिसा
रनसायविसूचिकारोगछिनमें
मिटजायअमरविनोदजुदियोवि
ताय अथकुटजातीचूर्णसर्व
तिसारे कुडेकीछाल२ नागरमो
था२ सुंठ२ इंद्रजव१ धायेकेफू
ल५ लोध६ मोचरस०।बेलगि
री आमकीगुठलीगुदानी२ वंस
लोचन१· पोसतडोडा२ जायफ
ल२ सबसमानलेयचूरनकर
कपर छानकरखावैमासे६ प्रमा
न औषधिजीतकुसैदै३ सर्वा
तिसारजाय अर्शलक्षणमाह
चौ० अमरकंदकामैदाअवनि
रसकपूरदोमेंकरसानमर्दन
अरुशरीरसेकरैअर्शरोगछि
नमैमिटजायदोमैंदरै अर्शरो
गउत्पति गुदारलेसबेसोफूलो
वकोकोपउदरकोहनीपंदप
कारबवेसीजानसोइअसाध्यके

होग्रु मान अथ धूनीबबेसीकाउ
पाउ अमरकंदकामेदहोयेसाम
र२कलमीसोरा२थेसामरपीस
गोलीबनावैबेरप्रमानप्रभात
संध्यासमैंनित्यप्रतिखायदिन
७ अथ बावाईसदिन२२ पावादू
रीकारकूजायपर५ख्यसेलीकी
सुजी अमरकंद मूंग दे ३ अथ
वादीबबेरीकीऔबधीकीक
रकाबंदान्यौंतकरलावैगुराम्या
नमैंबांधैरखागकीधूनीदे ३ प्र
टप्रकारकीबबेसीजाय अथ नि
सोदर ११ स अभ्रकसारविषगंध
कचारोंकोबराबरकरमिलावै
केघृतमैंपीसे अमरकंदकेर
समें रवरलेकरै दिन३मासागो
घृतसेवै ३ अर्शजाय अथ अर्श
रोगपै घेपरनकुचलैतौकपू
रकीधूनीदे ३ अथ चंदनादि
क्वाथ: चंदनचिरायताकरवा
लालैइजवांसा बासा नागर दे ३
क्वाथजुकरकेतुरतपिलावैर
क्तातिसार तुरतमिटजावै पुन: औ
षधि: नीलाथोथाटंकारालरं
कपरमानै ८ आधीपावल ५
गरुदशराणकादशपानीपीसकर
गुरामैं दे ३ कीजैविधिपरमानाति
क्रियाकीजैयुक्तिकरगुरामलपर

२९ परबांधऊपरकपड़ाबांधक
29 रद्धिवसतीनपरमानअरीगले
पाडामिटैहोयअववैद्यीहोनगुरो
पदेशांयमकुतैमतंत्रेषानाम
ध्यासिद्धिदामभैतत्रअथाग्निमांद्यो
ऽकुठारोरसः सौं०टकनारसगंध
कसमलेइमीगानीनसागकरग्
होसजीरवारकूपर्इंग्रकैहीपीप
लविस्यांकर्षसवलेईअथवम
मागमिरचनोलीजैजंमीरीरसपु
टत्रयदीजैरतीचारजोऔषधि
खायमंद्रिमाद्यविसूचिकाजा
यअथाग्निकुमाररवटीसोठः१
पैसेभरहूंगिपैसादहीभर१सेंधा
लवणः१पैसाभरचकु१पैसा
भरपीपल१पैसाभरलवंग१पै
साभरइलायची१पैसाभरसर्वपी
सचूरणाकरघरैमासा१खाय
होथाबहुतनकरैअथलघुकं
मादचूर्णांचकुर१पैसाभरम्बाम
रकूनपांचपैसेभरपमिरचदम
रीभरलौंगकृष्णदामभरकवारके
रसमेंखरलकरैपहरचार४
पिरसमोहूचरैदिन३फिरसुका
यधरैमुहंनाड़ठुदामभरकी
पमानसमयमदेणाकरैमाध
वचौः इतिकामादलघुचूर्णम्

2

अथ लवणभास्कर चूर्ण तालीस
पत्र पीपलामूल २ चवित्रयांरली
जै समन्द्रल नागकेसर वायविडं
ग सेंधा लवण पीपल संगजीरे
दोनों पत्रज उज्जान अमलवेतली
जै तदछ्छान भाग सब तंतरीक स
शुद्ध भाग हूछि मिर्च सब संग अौ
ज बायन दालचीनी चंद्र अनारदा
ना ला इची बड़ी चीता आवले ड
बा रबार सब समान लेइ चूर्ण कर
मासा पांच नित्य जो खाइ गर लग सं
ग ही जठर वय श्री मानूनै रोगन
साय अथ भस्मक रोग चिकित्सा
लछण तीव्र अग्नि जवन रकी हो
इ भस्मक नाम कहियै सोई अन
धना अति खाय अंग गात बह
कितर है। है। अन्न दिमें अति
घड़ी घड़ी मोजन करै भस्मकना
शबन पान अौषधिः। चौं
दार कजो है इ चियायता आनकं
डु खिदारी चंदन लान बाल मोथा
पदो लकर बाला पीपल मूल
मूसली काली इलायची कमल
अौर पद्मा। कसेम सोलेही नामें
ठान पतियां छोर अमर कंद यषा
न तां कोनं टंक टंक ऊन जान सब

समान संजा त्रिकुटा हरि कूटकुलानक
र स्वव मिरवार दोहा घृत सों चट
नी दृप्यि थै कुपर दुगध पिलायतनी
का जितना सों मिटै म सकरोगन सा
य ॐ अथ मंत्र ॐ ह्रीं ह्रीं अतापी म
हा वलाय वातापी उगरू पायअ
सुकं दह र पथर मच र गम र गा सय
र म स्वीकुरु कुरु हुं फट् स्वाहा अ नै
नैवचमंत्रै तो अबोतर शेतं जपेत
अथ कृमि लक्षणं ताप हौय अ
रुच लता होई है सूय अतिसार उद
र अफारा होत है कृमि लक्षणा नि
रधार अथौषधि: पलाश पापरी
सिकै घृत सो खावे है इउ हर कृमी
जाती रहे सुख पावे तब टह पुनः
हैंड मिसी न जवाखार तब कृवी ला
वाय विडंग कचलोन त्रिकुटा लै सं
ग समव समान लै चूर्ण कर घी सै
खो सों संग खावै दिन ३ तीन कृमि
को नाश करै तब लीन काथ: मद
सा पर्णी हरड देवदार सोहजने की
जड लै निर्धार क्वाथ करै कृमेला
मेल पावै दिन तीन २ कृमिहाय
पुनः सिंगरफ मासे १ जैमाल गोटा
मासे पआ आर्क दुगध में खरल करै
दिन १ जैसा पुरुष देखे तिननी मा
त्रा दे २ मासा अथ वाकी जड की र
समो दे इ पहले हिंगु चना प्रमान

निगलजायकृमिकोषलीगिरैअ
थपांडुरोगचिकित्सालदृशामू
दोहा तषादाहमसक्कर्दहीवद
ननषतमरखपीतादिनदिनघ्नु
देहबलपांडुरोगकीरिति अवौष
धि: त्रिफलाअरुचिरायतावंडु
काथकरसहतमेलकरप्यावै
पितपांडुरोगजायपुन: पंचकाली
मिरचदेवदारत्रिफलाविडंग
मोथाद्यारदाहसामागफलत्रयप
रिमानकूटकाटकपरैमेंछानस
वतिदूनीमेलैकंडूरअषगुरा
गोमूत्रतनवटूरसर्वपकायगोली
हीवांधैअदपमारागुटिकाक
रसाधैतक्रसंगवटीजोषायपां
डुरोगकानासकराय अरीसंग
रीअरूचताजायउदरूसूलमहूम
ल्लीहृतसायउदरगलैकोरोगसव
माजैमंडूरबजूरोगकेकाढे २
तिमंडूरवटीपुन: कालीमिरच
मिलायकेगऊतक्रसोषाइसी
घहैयगोमूत्रसूपांडुरोगमिटि
जायअथरक्तपितनिदानचि
कित्सालदृशामाहसोरठा

३१ दुर्बलत्वे इवैदेह स्वास बहुतड
31 हकासहो ज्वरमंदाग्नि पांडु रोग
पिंड दाह होअतासहो तरोसाह
ता जुनेत्रकरणाकौ रहो नासा
फलजुजो चरनको माराहोत्र
षो पाय: नष्टाच औषधि: षति
यां वासा आवले लैइ द्राक्षापषि
टहि मषकाइ दै इ रक्त पित हो रे आ
रु दाहु त रोसा सौ बल नासै ताइरु
नाद्राक्षा लोध चंदन प्रियंगु हरी
होत्री मेल हि मक शेमिसं गइस
कोइ के ताहु क्वाथ देर क्त पित्त को
रोग नसावे पुन: रो हा पित्त पाप
डा घौटके सहत मेल क्वाथ आप
वासर को कासहत मेल के क्वा
वे र क्तपित्त शांति हो ज्ञाय ख्वदाव
पाला पष्यनखाइ अथ महावि
नकु प्र वर औषधि: पित्त पाप
डो छडे टांक द चिरायता पटो ल
पत्रमं जीठ गिलोय बहेर रक्तचंद
न हर डकेबकेव हे डे आवले
नीवकी छाल कुटकी रससर फौका
सव समान औषधी सव की बरा
वर सहत तक तेमता सव कू कि
टम हो नकारण कत्र कर ता ति कै
हटके दोमर औषधि मेव पान

घोटकरख्वावैउलसहतत
केभरमिमिलायपावैकुबजाय
अथपेठापाकप्रारंभः पेठा
छीलकेखंडकरैपल २ जल
पल २ ताम्रपात्रमेंमेलेअगि
परपकावैसवजलसुकायदे
इसिघोरडारैफिरपानीडारके
धोइसिघोरैसोइपात्रमेंगरे
घृतप्रस्थमेंभूनडारलालकरै
खांडअथवामिश्रीप्रमानरं
पानकरिसर्वऔषधिफिरमिला
वैत्रि॰ कुटात्रिजातडीरेदोनोंलो
गधनियांमजीठीकेसरअसग
धमुनक्काविसेसिविहो२ थमीगछि
हारैखीवामस्तलीसेमलकीउ
डंगनवीजजावित्रिकुलींजन
पीपलगोखरुधरसमार्सेकाव
लोवहेडेवंसलोचनदालचीनी
मासे२२दोकौंचनागकेसरख
रहडीवीजमुलेठीमोथानामे
ष्वरतोला१वंगतोला१रूपर
समासे६मृगांकतोला१तोला
तोलपावैपाककरशुद्धिहोय
खुराकमासे२ह्रदाकरैपुष्टि
करैकामसस्वासजायक्रांतिहोय
इतिवेगापाकविधिः अथपांड
पाकविधिप्रारंभः वातरोगवाई

३२ परइलाजुकहतेहैं अंडगिरि
32 पल १८ मद्दीनपीसेवमाततरीये
दुग्धचतुर्गणाखांडपल ६४
घृतपल ८ त्रिकुटालौंगगिलो
इसततजपत्रडइलाइचीदाल
चीनीअसगंधचरासोपीपलाम
लैरामाकौंचबीडकेसरसुंठी
रवसजाविस्त्रीजायफलसारआ
मकमासे २० ऐसलेयपाकबन
सिद्धकरैपलमात्रावटीखाइ
आमवातचौरासिजाय ८४ बलपु
ष्टिकरैउदरकेरोगआठ ८ जाइ
अमृपित्तनासैबकुष्टनाडीव्रणा
कुष्ट १८ पांडुसंग्रहणीमगंदर
विद्धिविद्रधितेरोगजायइतिमरं
डपाकविधिः अथकूष्मांडव
लेहपेठेकेखंडटके ४ मरगि
लटकेसोमुरतामपाकतथा
सुतकापाकमैंचढागैअग्नि
देजललेसबजलजायतबउता
रैघृतकाप्रमानटके १८ मर
मिश्रीटका ४ मरपातकरसो
वधियमिलावैत्रिकुटा १ जीरे
स्याह २ मासाद्दैइसहतनटके
८ कत्रकरैअवलेहबनै
पल २ मासादेइपातसजीरा

सेत ३वीसवीसमासेलेइ घनि
यापत्रेनइलाइचीपल १॥ २३
घमारवाइरक्त पित्ततृषादाहज्व
रप्रदरजायबलपुष्टिकरैस्वा
सकासमेहदहत्रोगदूइ इस्वारवा
र छ ई ण तेरोगजायइति कूष्मां
डावलेह अथ आमवात सौ
भ्रस्टतनयासोमाप संठीपाक
माद संठीयल १० घृत पल २०
दुग्धपल ८० खांड २॥ सोंफजी
रस्याह त्रिकुटा त्रिसुगंध अजमो
वायन पीपलामूल सुफेद जी
रामु लैठी वायविडंग धनियांवां
सकी छीलन ताली सनागकेस
र अजमो दहर इ चीता मोथा
पलपलनै नामेप्रकार सारतो
लेभर लेनीकर गोवीविधि
दुग्धकूचढावे सुंठमेलपका
वै खोहा डलवहोय संठ कूंकाट
लेय सुकायमैदाकरदूधका
खोहा करै खांड की चासनीक
रैसब दवाई रलाइकेदेपरा
पककरलै छमासारेदइजै
मीठोघाटदेबेनैसीवलवसौ
करै पुष्टवतीहोयमंदाग्नि

३२ हो घावदा है आमवात जा इ
33 स्थूल स्थूतका समस्त रोग जा
य खुयी पांडु ज्वर स्वास संग्रह
णी रक्त गुल्म प्रहर सोमर रक्त
पित अम्ल पित घातु शोष प्र
मेह रक्त दोष ज्वर हृदय मूत्र
रो धक बल वा इतने रोग स
व जाय इति आमवात स्ती प्र
स्तत सो माग्य सुंठि पाके त्ति वि
धि समामा मांत्र अथ पर ज्वय स्मा
चि कित्सा ल दे शा माहे ताव
होय जि स अंग दाह अति शो
ष हो रक्त पित होय रे छो ई क
फ को कोप हो पांडु स्वास अंग
अंग ए मा बहीकं पतन तु अ
ति दी शाखि थिल होय अंग
हो अस्सा चय है जो औ बधि
करै वल पुष्टि कौ वीर्य वह
वै मल कौ रक्षा करै री वीव
स्तुन दे र उ तं हि भू कायतं
वलं पुंसा बलं यत्नं च हीष नं
वत स्तु य हि सा रो रदे वे च यत्न
वल हैं तसीति श्लोकः अथ
सितोपलावलेह मिश्री
चौरवैसे भर ४ वंसलोचन
दो पैसा भर २ सार मासे सहत

मेलचटणीकरावैराजयक्ष्मा
जायइतिसितोपलाद्यवलेहौ
षधैलादिवटीराजयक्ष्मोपरि
माह इलायचीछोटीपत्रजदा
लचीनीवंशलोचनपीपलमा
सा २· लेइकूटकपरछानकरै
मिश्रीमुलेठीछुहारेमुनकामा
सेचालीसचालीसलेइकूट
सहतमेलवटीकरै मासा १ भ
रकीमात्रावकरीकेदुग्धस
प्यावैराजयक्ष्माकारक्तथीसं
मनहोइ इतिराजयक्ष्मादिनै
लं अथराजयक्ष्माकोमृगांक
लिख्यतेपारामाराटंक १ मृगां
कभस्मटंक २ सिलाजीतस्व
र्णहरतालटंक २ ताम्रभस्व
टंक १ कौडीकीराखटंक २ सुहा
गाटंक २ अजादुग्धसौखर
लकरै पहर ४ मरदि किया
करटिक्कावैसंपुटकरवजोगु
द्राटेइ कपरौटीकरै तत्नीचे ३
गजपुटदेइ भस्मकर स्वांगसी
तलहोइ तबकाढै खरलकर
तीचार मरमिरच २० पीपल २०
सहतमैंचटनीकरै दिन २०
खावायराजयक्ष्मारोगजाय इ
तिराजयक्ष्मामृगांकविधिः

३४ अथद्वितीयमृगांकविधिः
34 लिख्यतेचौःपारदसोनास
मकरलेइद्विगुणसोनीनामे
देइसबहीसमकरगंधकले
इचौगुणमागसुहागादेइकां
जीसोमदेइदिनएककलवरा
मांडमैंधरोखिबेकुमाटीक
परा७गालललगायएनपुटदे
घरपसुकायगजपुटताकूम
गिसबदेइसीतलहोयउता
रजुलेयअनुपानरकौ।प
मानमिरचआठलेइअद्रुत
जानपीवलरद्वितीयलेय
नवजानसहतनएकपेसामर
कावैचटनीकरवैताहिख
लावैराजयक्षमादूरनसावै
इतिमृगांकविधिः अथकुष्ठ
देश्वरसलिख्यतेपारापु
द्धकरटंक१अभ्रकटंक१
सिंगरफटंक१मनसिलटं
करसारटंक४हरतालमैंगंधै
सोनाबररसकीपुटदेइ२१
सुकावैमिश्रीटंक३मिर
च७पीपलले३सहतमेंलेव

चटावै राज्ञ य स्माजाय पुनः
तृतीय प्रकार औषधि हा
क कावंदा पुष्प नदेव मेलै २
छा हमै सुकावै कूट कपरछा
न करै का गजी ना वृ मै मरे प्रा
त श ठ ना नूं वूं हे दिन दस
आय वा दिन २० रा जज स्माजा
य अथ क्षित दी शाऽ मत प
ऽ सा व [illegible] वीर सिंह मतेजी
स क र्ष म कौ नू ले र जी वं तीना
ग र सा टी है र पी प ल खि रै टी
विदारी देह खरोट छुहारा अ
रु बादाम तंतरी क वि क ला ले
राम क र्ष कर्ष त व को परमान
क्काथ जु कर कै लेहै छान
आम लै विदारी छाग मास दु
ग्ध लै घृत प स्थ स व प्र स्थ प्र
मान स हेत अ र पल ता कौ जा
न स र्कै रा ला र पल ५० करा
ही मेल अगिनि दे दाव दाल वी
नी इ ला र ची प त्रे जे नाग के
स र दै र पल अर्ध या कौ प
मान कर अब लेहै विधि त
हि जान स र्क रा लै र पल पं
करा ही मेल अगिनि दे दाव दाल

३५ 35 चीनी इलायची पत्रज नाग
केसर वै२ पल अर्ध याको
प्रमान कर अवलेह विधि
वतरत जान अमृतप्रासादया
कौ है नाम गुण है अमृत तुल्य
है कास अजा है रमांस रस
दे२ वलकत्ती वलकरी करे
२ स्वास कास हिक्का ज्वर जा
य तृषा दाह मेटै सव मागा
क्षई मूर्छा हृद्रोग नसा य
वीर्य वढै पुष्ट हो जाय अर्थ
चक्रमते शिवगुटिका शि
लाजीत का सत मुनका वहे
डा साल पर्णी पृष्टि पर्णी कटे
हली पुष्कर मूल पागाइं द्र
जव कौं चवीज मिरच राहासा मा
प्या दंती चीता वच नेत्रवाला
पीपल अष्टवर्ग पद्मकु पल
पलमात्रा अवले त्रिकुटा मा
ंगी पल २ विदारि फल २ मि
श्री पल १८ दालचीनी ड ला
इची पत्रज नवसलोचन पर्व
स वाये से मर लेइ गुटिका मा
सेर १८ प्रमाण पात खाय पथ्य वा

सीतरवारवदुगधमदिरामें
चावलगोधूमसतनैघब
गठियापांडुसोथतिल्लीष्ठ
ह्रीप्रदरप्रमेहूवधरीहृद्रोग
ऊरूस्तंभभगंदरविषमज्व
रसूलमसूलवाइजारती
रकोफुलावेंकामतैमतग्री
जीतेकुष्ठकृमिस्वासकास
ऊरूस्तंभउन्मादनाइबल
मीमतुल्लकरैमूत्रैकछा
जैसमाधिवलतपनजाइ
कांतिकरैराजयक्ष्माजाको
याकुल्लकरै इतिश्रीवगुटि
कामिश्रपद्मादिघृतंराइ
यक्ष्मोपरिमुनकादारवपत्र
२ मुलेठीपल २ डेलपस्याद
मैंपकायकाथकरैचतुर्थांश
रेहतबलेइफिरमुलेठीपल
२ दाखपल २ घृतपस्थपल
पल २ गोदुग्धपस्थचार ४ क
याहीमेमैलैमिश्रीपल ८ मा
मिलादे ३ घृतसिद्धकरैपल
२ घृतसायप्यावैहयौरोगराजा
यवातपित्तज्वरजायसास

३६ कास हलीमक दूर रक्त पि
36 त ग्रयक्ष छक्षा क्षा इव वल वृद्धि
करै ॥ अथ कास चिकित्सा ल
छोटी माइ पल ॥ ककनीदन
ही आवही श्री ... खांस
पारा वतीति सव दूनाही इश
ल देताहैं कास तो अवधि
अर्क के फूल टंक १ पीपल टं
क १ कमारी बीज टंक १ सो
व लल लन टंक १ लौंग टंक
१ तमार खू टंक १ खि र खरं
का १ भाफ गी टं०१ काकड़ाशि
गी टं१ कुलीजन टं० १ मुले
ठी टं०१ सव औषधि बराबर
बटी बनावै प्रातसमैं ॥ क गो
ली खाय दिन ३ औषध वा ८ वा
॥ का दूर ॥११॥ खांसी जाय इति
खांसी की गोली की विधिः
अथ द्वितीयप्रकार माहू पारा
गं थक सम कर ॥ हीसार सु
हागा मृ नादे इमीगाराहरी
बिडंग ... हींपीपल त्रिफ
ला औरू देवदारु त्रिकुटा
सन गिलोय को मार पद्माक

कटेली सम कर लेइ ववूल
काथ मे खरल न करे इरतादी
इ र पान सो खाय कास स्वास
सव ही मिट जाय अथ स्वं की
खांसि की औषधि: अडूवा
यन टं कर कुलीजन टंका
वच टं० १ पीपल टंका १ पीस के
वारी बकरे धतूरे का पका फ
ल लाय वीज निकाल स्यो था
करै सव औषधि उसमें भर
दे इ फिर आटा गो ह्म के से
संपुटि करि मलमल मे दे इ सी
तल कर कै आया उतार फि
र आया उतार फिर धतूरे
श्च वा पी स कर धरे स्वं को खां
सी पर दो रती पान में खाय
कास स्वास सवां स्वं की षांसी जा
इ अथ हिका चिकित्सा लन दे
रा मा ह दोहा नासिते हिका
उठै कंपावे वहु देह दुव की
वार वार ही वात है यति सदे
ह अथ उपाय ते औषधिः
हरड सटह मेलन औंला वे

३७ पीपल सहत मिश्री चटावे
37 अजा दुग्ध सुंठी मेल प्यावे
हिक्का जाय पुनः मुलठ काथ क
र बारीके पत्र बरनेके पत्रती
नो को भस्म कर के मेलै सज्जी
षार निंबूका रस सहत मेल
प्यावे हिक्का जाय पुनः चंदन
घीस मुखों कर घृत से घाल
वस्त्रामें लप्यावे पारा मासे ३
शिआन्नमें खरल कर मह
र धूर फिर सहत मेल प्यावे
हिक्का जाय पुनः उपाय वि
धिः छड मार तमाखू का तर
ह येत्र में प्यावे हिक्का स्वास मि
टे अथ हिक्का स्वास पर औषधि
: रास्ना अजमल सुंठि जौ ले इ
स घृत कर मेले पट नीदे इहि
न छिनमें जो औषधि प्यावे
हिक्का स्वास सांति वै मिमिट जा
वै अथ आमता सवर सो बारि वैद्य
रहस्य पारा वृंग धक कृष्णा
रू सार टंकन रासा कृष्ण ले घा
र त्रिकुटा त्रिफला अभृक देव
दारु अम्मता दो २ ग्री अरु पंचौ
३

कविछम छड़ारे पीसे निरधा
र सहत मलके चूरी चटावे
हिच्की स्वास समि हिन नमें मिट
जावे अथ स्वरभंग चिकित्साल
षे ... स्वरभंग जब होय मध
अरुवो लनही कफकोहोवे कोप
अगहोय ... राही अथ पोपाय है
इक काली वच समकर लेइपी
पल सहत कर चटावी है इत्रिकु
टा त्रिफला पीपकर मूल सह
त संग ही जै स्वरतल अथ कव्या
दि खीव वच सम कर लेइ पीपल
सहत चटनी है इत्रिकुटा त्रिफ
ला पीहे कर मूल सहत संग ही
जै स्वरतल वच अमले वेत त्रिकु
टा तंतरी कतालीस हो नोंडीर
वंस लो चनत जछोर इलायची
चूर्णी कर पुराणो गुड सो रवायपी
न स स्वरभंग जाइ अथ गोरख
वटी लि रवते रस मससारत
मे ष्व र शुद्धि कर कटेहली का फू
ल कूट अर्क का दि रवर लकरै
दिन ३ भंग बरावर मुख में राखे
स्वरभंग जाय अथ अस्य हिकि हि
चकी चिकित्सा लषहे रामा हरदोह

९८ हृदे स्थलपुनर्पीडतनु आरु चिग
38 लन्छरा जानत वो पाय मनार दृ
ना फल २ मिस्रीपल ॰ त्रिकुटा
पल ३ त्रिफलाटंक ॰ चैरगुक
अकार येलदी पनपाचन सुख
करनपीनसस्वर भंगजायमी
तकासस सबदीमिटै भगंदरी
नेताम इतिहा ड्रिमादि चुरमी
कः भोजन ग्रेसदाप थ्ये लव
राग दूरी के मदो के रोचनेदी पन
वन्हि त्रि ह्रा कंठ विरोधनं जा
यलवंगा वि चुरी लोग कंको
लखस बंदन स्वेतकमलग
ही जीरास्याह मेथबाला पीप
ल अगरुतज नागकेसर गज
पीपल मुठिबाल उडहेडीला
यचीक पूर जायफल येसलो
त्रनु वी के बीज सर्वसमान ले
इ मिश्री सम व ते दूनी आधी
चुरी कररा वे गो दुग्ध सो रवा
इ मासे भर बल पुष्टि करै पि
त्त बहरै सो बसंताप हरै उरदे
नवि व दाका स हि बको अरु छि
य दमा पीनस सगहे राग्रो अति
सार न आम प्रमेह रातै सर्व रोग नाय

२

अथ छर्द रोग चिकित्सा लिखदी
गामाह पंचमूल क्वाथ सें हो
लवणमा में लप्यावै उ सपित्तछ
र्दरोग जाय मुनक्का दाष क्वाथक
रदु गध सों प्यावै छर्द जाइ जौ दी
नां वृटी सहत में लप्यावै वात
छर्द जाइ मोर के चंदा की मस
हार इ सुंठ उड मरीजे लाप
के सहत सो चटावै छर्द जाइ
अथ रक्तसंग्रहणी तत्र क्वाथ
धीटस्य भवेत क्वाथः समधुः
पित्तछर्दि कृत्स पीवा...
विनाशनं २ पंचम...
कृतः क्वाथः कफछ
विनाशनः वैद्य ह
स्य मते गुरु क्वाथि हिम
पीत्वा लोचनाम धु संयुतः
त्रिदोषं छर्दि जान रोगा २ वा
तपितं च नाशयरे २ पुनः इ
लायची छोटी लौंग गजके
सर १ कमल गट्टे की गिरी धा
न की खील पियंगु फूल मी
या सेत चंदन पीपल मिश्री स
हत में ल चटावै त्रिदोष छर्दि
जाइ अथ पिपासा चिकित्सा लिख्यते

३९ 39 कंठसूकाजायवारवारतिस
नालगै अथोपायखसमौलि
हीचंदनधनियांहिमडलमें
पीसकपडछानकरै मिसरी
मेलफकावैतरशाद्याहममम
दमोरजाइपुनः धुहारहा
रमलैलैहीचालीसचालीस
मासेपीपलइलायचीछोडि
तनपत्रजबीस२०मासेलेइ
सहतगुटिकाकरवांधेबेर
प्रमानदेइतनमामिटैअथ
रत्तीचिकित्सालक्षणांव
म हीववितिसरेहहोषवड
वापरैममअवेतनताहो
इवेदइमभावैहैनीलासपा
हआकाशादेवमेववर्णोहीनं
दृकहोवचनसुनैनहिंकरण
ही अथोपायः औषधविधिः
भारंमः भृतमतेः देहोमु
नकादाबअरुआवलावि
ष्वा२०मिरचपीयसवमधुंसं
गचाहियेमूर्छारोगनसाय
निदानमतेपितवावडाप्रिये
रफूलमिरचकंकोलवि
कुटासमनहलफोघमेलह

कैरापाय मजीठी रोग सहा मि
टजावे त्रिफला काथ मि श्री
अरु सोइ अथवा जवासा का
थ मिश्री मेल प्यावै मदिरा
दाह जाय ७ हार दाषपकी
इमली अथवा पात अनार के
वीज वीस प्यावै मदिरा दोष जा
इ आवले धनियां प्यावै दा
ह शांति होय अथ दाह चि
कित्सा लेदरा मा हवा ह
अंदर ७ रूष को दाह ह ७ ७ वि
कराल [illegible] न दोरा है यता
से मसान द्या अंदर ७ रु ७
ले ताको कहियै दाह अथौ
षधी: आवले धनियेकी
फकी करै दाह मिटै मल
यागिर चंदन पीस प्यावै दा
ह जाय दूध चंदन मेल प्या
वै पीस कै लेपन करै नाभि
ऊपर अग्नि तन की मिटै अं
तर दाह जाय कवल की ज
ड खस चंदन पीस प्यावै दा
ह जाय दूध जव मुलेठी पी
स लेप करै नाभी पर अंतर
दाह मिटै अथ चंदकादि तैल

४० रस रत्नावली नाराता मेश्वर
40 अभ्रक सवदो वट २ लेइ गं
धक टंक ४ सब की कजली क
रै मोथा रस अनार रस की पुट
दे ३ तीन ३ कुवार पित पापरा
बस मूली का रस एक एक पु
ट दे ३ कद्दु गिलो १ सम पीव
ले बस चंद्र न सरिस सव दो
दो २ टंक ले ३ चरता को बाप
र छान दाब क्वाकाढा कर पुट
७ दे ३ छाया में सुकावे घडी
२ चरा ओप्र मासा जो ली करै भ्र
मर पित प्रशमन पद रसो का
जाय अंदर बाहर की दाह
जाय श्लोक ग्रीष्मकाले
शरत्काले विशेषेण प्रयाजप
ते नृत्य कछु हिम सर्वी सेवम
हाने चंद्र स्तरात हर लेषर
सोनेनं महा चंद्र कलानिधिः
मेहबौ दिरक्त पितानां मूत्र
कछू ज्वरापहः अथ उ
न्माद चिकित्सा लक्षणमा
ह मन चिंत भ्रम होय अव
ध प्रनि वचन निकाहे है
श्रेन्य क्रति दाह हर्ष क्रो निहो
वै नासे गीत नृत्य कर मदन व

४

हुजिव्हाहोयनयनातननमेउ
कैउन्मादभूतप्रेतकेचिन्हा
उपाउमाहदोहाचित्रकूटाहिंग
सींघावचकूटकेसिरसबीज
गोमूत्रमेंपीसकेअंजनकर
ओजिरगीस पुनः वातकोसेह
लैपककरावैपितकोरेचनक
फकौवचन छार्थः वाहीपे
ठावथशंकूशंखाहूलीकूट
साथमिसरीमेलप्यावै पुनः
रांगधकासिलाजीतरकोसपा
त्रमैंकजलीकरकेपुरगोदेह
धनासावीजनिरंगधसानवरी
ब्राह्मीरससोरवरलैशतावरी
छतसोरोगिकोप्यावैउन्माद
रोगनिश्चैकरजावै माशू पुनः
पारसपीवलताकेबीजगोमूत्र
मैंघिसैजवउठैरोगउसीसमैं
नासदेइउन्मादरोगीजायअस
रध्यइतिउन्मादचिकित्साअ
थवायरोगीचिकित्सासंपूर्णं अथ
वातकीदेलामाहमरोगनाशा
अदरोगीवाउनकोनहीदेशमैं
नअफकंठसर्वसंधानहीउद
रकंफलीनामहदयअस्थाने

४२ होइ न्हीं बोर हो इ पीर गावयु
41 ने सूककही चौरासी हो इ है वाय
कहो है मेद ही अथ औषधिः क्षिरो
ग है त्रिकर्तव्य गात्र मते क्रिया
दश्राम्ल लीकवायेन मातुलिंग
रसेन च स्र तेन तैलेना संग
शिरो वर्ति प्रयुज्यते अथ द्वि
कासंयुमपर औषधिः त्रिकुटा
अजमोद सें धानून समकर
चूरण ग्लानो सूल न जंभीरी रससों
चेटनी दे इ जिव्हा दोषतुरत
हर लेइ पुनः त्रिकुटा सें धोल
न कर वा तेल में लवटाी करे
जिव्हा ऊपर मलै उपरांत तो
ल न रस दे इ जिव्हा बात जाय
अथ रसनगुटिका सें धोलव
ण २ ही गअद्रक रस तीनों ति ल
मेल पीसे वटी चौपमा ता कल
मे दे ये त पाते रुधाय हर अंग
मसुखी मवे ते क लपन अव ले
ह मिरच मूले लौं सब समान क
र कै कपर छान चूरन कर लौ
जै घृत के संग चटावै दिन २१
पश्चात् रोगि महा सुख पावै जिव्हा
रोध्द महा रस हो इ को कलाक
ठ बोले स्वरसो य कोषः प्रलो

द्राख मूसली वला माषे: क्काथ्य मैं ला
ऊव मिश्री तै साथे मुक्का पिवे तस्म वि
प्राचाम मैसे बाहवेताः ॥ अथ साया है
लिमते जोगराज गुग्गल त्रिकुटा त्रि
फला जवाखार पंचलून सज्जीखि
यवार ताली सपती स काकड़ा श्र
गी हीङ हरिद्रा गजपीपल श्रृंगी इ
लायची वच अरलुवाय विडंगी चि
त्रकरमूल अक्करा नागर संगी मोथा
अजमोद पंच समकर लेइ सब समा
न सार तेइ सार वा तेवर मिला
जीत लेइ सर्व वरोवर गूगल लेइ
कूट कार्ट कर गुटी बँधाय घृत
गुड का ताहि मिलाय मासे मात्र
गुटिका पहि मान सहत दीजे सम
जाहि खवाइ सर्व वाय को हरे है सु
ही ऊपर राष्ना क्वाथ जुर हीसै
मू जोगराज गुग्गल वंद संगहार
त्रिफला चित्रकु टा वाय विडंग
चव चीता वच पीपल सगवाप
ला मूठ औरु गुरहार धायफू
ल अकह तेवर भार वो पकार मू
ल डोकू ट पतीसर जनी दोनों जी
रा सु जगरा स सूठ पतर ज धावा
सी लेइ विरि चे नसो धता मैं इ
दोनों दोर जसी घा सा इगजपी
पल समान सब ताहि सावेसमा
न गूगल को लेइ दे हा घृत मैं

४२ मेल गुटिका करै बदरि बेर प्रमा
42
ने भोजन के अन्त औ रहै औष
धि खाय समान चौ० सहत संग
जो कोउ खावै ताते महा परम सुख
पावै अरु बउदावर्त अरु बृद्धि जा
य ज्वर उन्माद प्लीहा नसाय कुष्ठ
कमल पांडु रोग है इ वायु बात सि
द्धि नहि संदेह अथ महानाराचवा
सम्या यन्तर औषधिः हरड किरवा
लो आंवले त्रिवृती कंड निसोथ मोथा
मात्रा पल पल ले लेइ अथ वा प्रथम
जल के प्रमान सबो पंचे सेर आ
ठ जमाल गोटे का गिरि पल मात्रा
जमाल गोटे रेख के है ३ अ० ८
अथवा सात ७ औषधि को अधि
विशेष काथ करै कुडाहि मे छा
नेकै पकावै सघ ने होय खिर लमे
जोर करै औषधि फ वर सेगरे
सुंठी भाग २ जमाल गोटा भाग १
मर्दियै रपत ले लेइ रती २
खाय सीतल जल सो इ तथा
च श्लोकः अध्मान प्रशूल लसा
ना या पत्या ध्मानं तथैव बच्चु
दावर्त पांडु गुल्म उदर दोन
रूपति २ पथ्या मिश्री दही रला
य के दधि संघा नेमाने इ इज
हो वयु वा रा स्या न ते को हो य
बाल के को पोट ली से से कै अपरा
मोदि धि काथः गिलो य किर वालो

देवदारुगोषरुचौषककरमूलसं
ठकीजडअरंडेनत्रिकुटावासाव
चमौठीपतीसद्रुहरड सतावरविस
खपराबायविडंगरवरहठीअस
गंधचीताचित्रायताअरणीकट
हलीदोनोसमानकूटकाथदे ऽ
वैहुनवायुजानेतोजोगराजगुग
लमासेपमेलदेवोतकावैजपास
हनचलावैसमस्तवायुजानीरहै
इतिरक्षिराहार्मादिकाथः अथपस
रणीतेलअकासवेलपिरहठीअ
कासवेलदसमूलीइनकाकाथ
करअथविरोषतिलमेलपका
वैपासिधकरै। इतिपसारणीते
लम्। अथलघुनारायणीतेलम्। चं
दोतेलचीताअरणीसोनाकपी
ठलवेहेडाअकासवेलअसगं
धकटेहलीछोटीवडीदोनो
खिरहटीछोटीवडीदोनोंवचवि
सखपरा इनकाप्रमानदसदस
पललेवेचउगुणापानीचार १ जलले
इ अथविरोषकाडाकरैतेल
मेलचलावैसौफदेवदारकौठ
वचचंदनतगरकूटसालप
रणीमुलेठीरासोअसगंधसं
धानेनविसवधरापलरदोइदे
इलेयतिलकातेलपलौरहद
गधपल८ मैलेसिधकरैसपद
नकरावैपकावैविधपानतेलिगथिंग

४३ 43 लताढूर होय अर्द्धपानै अर्द्धवा
नै शिरोद न पानै ह न से मवानै वात
चौरासी जाय नारी का गर्भ ठहरै सो
य विधि गर्भ तैल लै धतूरे का रस से
र १ अरंड के पातों का रस सेर १ सिंभा
लू के पातों का रस सेर १ अरनी के
पातों का रस सेर १ लौह केवा सन में
मैलन है लै ताता फल कूट पालन का
य फल ल अफीम मासा १ सुंठी दोय ट
य पैसा भर २।। लै घरा का रके स
म सब लै १ अर्क दुग्ध सेर १ पमान
तिल का तैल सवा सेर जाम सेर सो
का तैल लै सेर ।।२।। अरंड तैल सेर
१ ह यस व को रलाय कड़ाही में म
ले चहि ऊपर अग्नि दिवावै रो ष
तैल जब रहै सुतै रहै नरन उतार
और ना को लेट पलाय के तैल रहै
निरधार मर्दन कर सुख होवै
और अब गंगसरूप साता वात संधा
न कपात न जैन र होय ब कार पुरुष
री बर्त जाय अमर बिनोद जो दिये
वेनाय अथ नाना विहार तैल मा
ग अफीम घत रे के बीड जाय क
लै बंधवी कुचल्ला हिमाल केवी
जपुहकर मूल सव औषधि सब
कूटके गेरै तैल में तीन दिन धा
मे मर्दन करै वायु जाय अथ ग
जके सर सरसः अफीम कुचला

मिरच अजमन कटंकटंक लेइ ताको
लेर समसो खाल ले कौ सु कावै तौ र
वातनमें दइ कु कुकरा धक सीत
लाप विसूचिका जाय अथेसंग्रहम
पर औषधिः त्रिफला त्रिकुटा पी
पलामूल ले चूर्ण कर कै सहत सों
चेटावै पुनः मद्यातका भयछुटी
दाहह्पम्या पुनर्नवा पंचमूली छयो
मिसंउहले मनिवारा खडूवया
ला न खाय छूतेमधुर देय ॥४॥
इति श्री अमर विनोदे भाषायां अ
मरसिंह विरचिते वाताधिकारः
[redacted] चतुर्थो ॥४॥ अथ [redacted] वात
ले दोग मादृ देहो जानूजे पपी
डाकरै दोनों पग होय सो घटके
नमारी अति दुखै आमवात कोदे
बचरथा पायः तयाचे औषधिः ले
यन्नेचन ५ बहेटकने टाकर
सेक अथादि सादादि चूर्ण म अस
मोदापीपलेदेवदारचीता सैंधो
लवण विडंगले मारपीपलामू
लसोंफ अजमदल्ले ही मिरचाटकसे
दाउदेइ आमवात को हरै जे सो
पद्देइ पांच कर्षहरआन दशवाय
सौंठ लेले छानकपड़ छानउ मोद
क देइ आमवात को हरै जे सो इ
पुनः जोगराजगुग्गुल मासे ८ दश
मूरउरंड का तेल मासे २० मरदन
मेंथो लिविला वैकपरा तेंजैपाक

४४ जाय आमवात जाय ॥ अथ मूत्र प-
44 योग: अथ शार्दूल नाम गुग्गुलं
गुग्गुल त्रिफला पक्ष वरि मानकर सूं
फल तेल अथ ब्रह्मी त्रिफला पक्ष हो
त्रय ते ही सार्द्धं द्वौ जल मांहि मिला
इ पाव रहै चतुर्थ अवशेष करै ही सब ही
मैल कराही देही अग्नि दे इह पकावे
नेही सघन होय उतारे जे ही त्रिफ-
ला त्रिकुटा वाय विडंग देवदारु गु-
डूची संग चीता तैं बीजे दंती देले ही
वच सम करनहिं तामें दे ही पाव राग
ध कक जली करै अड़ै पाल सह
अपुन हि घ से दो छे नु मा ले व
मैं दे ही मेल करा ही मिगु टिकाण
ही मासा दो२ उष्णोदक दे २ आमा
वातको हरे जु सोई तथा छगुरा
अग्निं नीच कुलते दांधी व रु वा न
ले सं भवं धातु वृद्धि यकेव वृद्धि व
ले शूविपुल तथा २ आमवातं श्री-
रो नातं गृध्रिवातं भगंदरं जानु ते बा
श्रितं वातं कटिवातं तथा बचरं शुा
था२ वृद्धिचू फलादि गुरु जानु वि-
नाश ये २ उपदंश गुरु दे अं आ
म वाते विपर्यये २ अथ मेथी पा
क विधि: मेथी पल८० सोठ प
ल८० दो नों का चूर्ण करै दुग्ध मैं
पकावै दुग्ध आढ़क प्रमाण घृत प
ल८० मैं लवो ताकरै मनौ लाव
करै मिश्री आढ़ प्रमाण चासनी करवै

पथ्यात्र औषधि मेले- मिरच पीप
ल सोठि गजपिपल मूसली चीता
अजवायन जीरा सुफेद जीरा स्या
ह धनियां अजमोद सौफ जाय
फल सा होदाल चीनी इलाय
ची पत्र जे मोथा पत्रज लमा
जी लेइ इनका चूरी कर के चासि
नी मे मेलै फिर खैवा के मेलेव
टीपल प्रमान वार वलबृषकरै
आमवात जाइ सर्व बात जाय
वीर्य वृद्धि करै विषमज्वर जाइ
पांडु रोग सकामल उन्माद जाइ
अपस्मार जाय प्रमेह जाइ बात
जाइ श्रोणित जाइ अम्लपित्त जा
इ सर्व शरीर पीडा दद्रु रोग जाइ
अथ वातरक्त लक्षणं सोर गम्मा
त्स होइ शरीर विकल होय सब
प्रन्यही जानु जंघ अरु ह कंठ हस्त
पाद अरु प्रन्यही विवर स मद्दा
दल होय रक्त विकार होइ लल द
ला होय रक्त तब जानिये अथ कि
शोर गुगुल त्रिफला तीन प्रस्थ
: हीले ही प्रस्थ गिलो य
इ जु तांमे दे ब इ गुग
ल एक प्रस्थ प्रमान गिलोय त्रिफ
ला क्वाथ करै है गूगल मे व क
वैसे छाने के राही मे लल अग्नि
दे मान दूध सेर सेर दस नामे डारै

४५ विधिकरखेवाष्टववनाऔपका
यदूघ वीवादेयडायछतगेर
45 केरखवरलायपलपकऋमता
रेलेइ ब टऋदत्रिकुटातामेदे
रहीदंतीगुवीविडंग समानकं
षकर्षया कोपरमानकुं टीऔष
धिषावामेलेगूगल तामैंफि
रिकरमेलेनसवऔषध घऔषध
धिडालैपूवकुटकैगु टिकाबां
धेवादशमासेगुटिकामाने मंडि
षादिक्काथसंसार वातरक्त ४ अ
षादशाकुष्टजाइवरासर्वै ९ने
इ विंशतिविशि २०। २०। कासस्वास
मंदाग्निततेरोगजाइ अथमंजिष्ठा
दिक्काथ मंजीठमोथावंडू गिलो
यसंठकूटमारंगीसोयहैदाव
चेहरिद्रादोइत्रिफलापटलेपल
करूजुवासेइविडंगमूर्वा चीतालै
दशतावरत्राहिमान जुदेदीइरुड
वअरुपीपललेइदेवदारुसंग
पाठाहेइबदरचंदनतवी विषा
राचवकरवालानीवव
बायमाहेवीलेहीविष -।
लेमाअरुदंतीहेइबोरव सावा
पर्यटलेइमैंमगरकरंदेवा यती
सहेइनेत्रवालापुनर पिमान
सवऔषधिडोलेयसमानचधे
थीशगोषक्काथकरेइ वातरक्त
कानाशकरेइ अष्टादशाकुष्टसवडा

४५

अमरसिंह सबदे हुवताही मेंदराग
अरुपद्या घातेनेत्ररोगकोपर्वैवे
प्रातः अथ लल मंजिष्ठादिक्काथः
चिरायता १ रसोत १ गिलोय १
पटोलपत्र १ मंजीठ १ त्रिफला १
सहत मेंनाव दिन ७ अथ महा
दिचटनी गिलोयनिंबोलीकीगि
रिसारिवात्रिफलात्रिकुटामोथा
पितपापडाहिंसोरे नेत्रवालावच
दारुहलद रक्तचंदनपाठ मुंडीवासास
व पलपल मात्राले ३ मिलावेसरसा
१ सबकोकूटगुडकोपकारेबोड़
रागुणापानी मेलपकावेचतुर्था
शरहेनद उतारलेयतनवछोडनेकि
रकडाही छुहकरिचेटावेनामेंको
छगेरकैपकावेसघनहोयसीरा
सातदगुडपुराणा त्रिवर्णकापल
१०० मेलेआगिदे १ उसकोफिर
पकावेसघनहोयतदओरऔर
बध मेले चूर्णत्रिफलामोथासें
धानन ३ लायचीछोटीदालची
नीनागकेसर पत्रज दारुहलद
पलपलमात्रालेइ चूर्णकरके
कपरमैंछाने ततीयबार छान
करमेलरलावे अबलेहका
मात्रामासे ४ देइ छलेलरोरहेहो
इतोदेपलनिदेय वातरक्तचित्र
कुष्ठ दद्रुदद्रु थामरू नेक
उरीक चर्मविस्फोटरक्तचित्रसं

उलकुष्ठ कपिल पांडु कासस्वास
अस्वादुद्रौं कुष्ठ जाइ १८ रक्त के सर्व
विकार मिटै पुनः वातरक्त कौ उलौ
का प्रसिद्ध है अथवा मंगीओष है
अथ गडूच्यादि क्वाथो वातरक्त कौ
तथा च वैद्यरहस्य मते अथवा ओष
धिः गिलो यवा पथी पवार के बीज
नीव व का यन दूर इ हलने दूदो नोंआ
मले वांसा सतावर नेत्रबाला बर हटी
छोटी बरहटी बडी बरहटी तीसरी
बरहटी चौथी मुलेठी गोषरू पडे
ल रषस मडीठ रक्त चंदन क्वाथ क
रदेइ वातरक्त कें दूमंडल जाइ अ
थ मृत्युवद्धरी पर ओषधिः पारा
गंधक मनशिला हरताल चारट
कले कागजी नीबू के रस में खर
ले तामपत्र सो छोय के कट कवे बी
कर के चारों को लगावे गजपुट दे
अग्नि देइ ताम सिद्ध होय हरताल
सौं टंक रती नौ पीसपीस मध्य मं
दे ऊपर आटे की संपुट करै मुंह
कपरौटी देइ सुकावे कोयलैन की
अग्नि सेर १ की विधता वा मारा ह
रताल सी पीकी मीठा कूट ८० अ
कर्करा जाय फल सं मालू के बीज
धतूरे के बीज जायफल हीविवी
सुंठ चीता मिला वा सुहागा त्रिकु
अजवायन रासा मालकंगुनी कलौंजी
मेथी कस्यापबी हलनद लारवेट कटंक

लेरकूटछानकररखलैरात्रीदिखाय
करैपुरटेरंअस्टह्कंकेरसकीपुरटर
पुराकश्रअ?मासासहेनसेदेरस
नवहूरीजायबातरकूशीनपितनको
म्हपितन्स्वासकासदोयीपानसवा
य।१४कुष्ट८जा१३पद्धदुगधमा
नछूनमिस्रीहरीचवेरोको।१।देहि
ने·संहितामनेन अथ स्रून्सवहरी
पर लेपविधि: मीठाचनाचीतहि
रबीजतुमालगोटेरेवटचेनीमिर
चेकायफलगोमूत्रैसोपी?पछ
नेदैकरस्त्रन्यगातपैलगावैड
वलोल्लडगहूहेजायडवमलहू
मलगावैचेगाहेजायस्त्रन्यता
जायअथसपनमूलस्त्रन्यताख
रीहीररसडोगचितानमामतेन
चेकटकैमरपाग्वैसमाकैरंव
डकरैघोरमैमलैछांछमेलैवू
ल्हेवरचटोवैअगिदेइजवछी
छुटैसेररहैनदउताहै।डल
सोसोघगरैकिरदुगधमैंसी
टावैबडीरढ्यकाटकैसुका
वैमिरचपलरकूटकपरछान
करैपारदमस्मपलरअथवा
सिंदूररसपलरमेलैखरलक
रैमासेरखुराकजलसेदेयदि
नर४८बधमोरैतेदुलछत
दुग्धगोधमनगचणाकमल

नाशाय शूलन्यता २ शूलन्यवहरीप्रसि
द्धवातरक्तजाई ॥ अथ गर्भचर्मकी
तैलमिरचादितैलमिरचानिसोत
दंती ॥ अर्कदुग्धदेवदारहलदीनों
छोटकूटसिरसकेवीजनिवोलीसा
लपरणीकिरवालासंमालूकेवी
ज मोथाथैरकीछाल हर नालम
नसिलचीतापीपलमासामासाम
मलेरमीठापल २ जमालगोटे पल
२ तैलसिरसोंका ॥ आठपमानस
वतैचौगुनागोमूत्रकराहीमेंमेल
चढावै जोकेवकरकापादिरहे
ढ गोमूत्रमेंगेरे मनसिल हरता
ल पीसगेरे मंद मंद ॥ अग्निदे २
तैलसिद्धकरै तीनदिन पीछे लगा
वै ॥ अथादरा १८ कुष्ठजाई यामदद्रु
गई चर्मशूल्यता वातरक्तगे तेसव
जाय ॥ अथ शूलचिकित्सालेहोरा
माहृदयौ० प्रथम पहले घृत वमन
स्वेद रेचन पाचन शूल वातशूल
होइ स्वेद करावै पितकारे चवक्र
करावै कफको वमन प्रथ ३
पा० सुंठ कं जवी ॥ अरंडकी छा
ल कर कैहिंग मेल पावै शूल
जाय ॥ अथ पितशूलपर ॥ औषधिः
॥ अवलेह सरावली मुनक्का जल
मैं पीस छानकर मिश्री मेल पा
वै पितशूल जाय ॥ अथ रसावली

सर्व शूलपर त्रिकुटाद्यहरीनकी
कुचला पुनः अह हिंगु सैंधा न्नै
स्याम द्रल दी सब औषधी जल
सै पीसनि संकुउ औंद कसो दीजि
ये सर्वशूल मिटजाइ चूरण ताय ही
पत्रासत है सतगुरु दियो वताय वै
द्यर हस्य मते कपीसा थ्यि कुल
स्य का त्रिलटावैरे रं ३ मूलो ति
सी वर्षा मूल बालाकं गलणायुतैः
कर्तं च दध्यकं विर: स्याद्दध्यक
र्पयो टर्यशिर: स्की ज्ञानुपार्द गली
गुल्म स्कंद कटीरुजै र्विजयते नि
:शेष वातार्ति हा २ अथ शूलपर
गजकेहरी ग्रटिका है ३ सुहागा
सौंठि हिंगु मिरच छीता वायविडंग
गंधक सैंधा न्नै कुचला सम लेइ
सब को जल सै पीस कै गुटिका क
र लेइ रती च्यार कर दे ३ उष्ण जल
सो औषध वायशूल रोग छिन मैं
मिटि जाइ शूल जो अमानविवंध
गुल्म शूल हुते जो बात अजीर्ण
अरु विज्वर तै रोग जाय औषधि
वर्तलेदेसां अरु चित्रनिहारो शू
लेउदर है यज्ञ औषधी मूल व है वे संत
भक्ति दृढ़ खजूरा बाध बास्याम
का सज्वार छुटै है इनाहि उदावर्त
के रोगय है सनगुरु दियो वनाय औ
षधाय: दोरवाडे जैलो डैनीनपल

४८ कहा राग टंक ले सोर मे डलावै गा
मघृत संग ही लीजे ॥ ७७ ॥ जो सैं भार वा
त पित कफ होय नासे ॥ ७८ ॥ गुल्म
र विकार ॥ अथ नाराच रस ॥ ओ डेप
ल पारा गंधक सुहागा त्रिकुटा स
म अदरक रस मे खरल कर तीय मासी
दे ॥ घृत ऊपर प्यावै ॥ ७९ ॥ दाव तें गु
ल्म जाय ॥ अथ फलवर्तिका ॥ मैंन
फल गद घर मेंविड लूंण वर त्रिकु
टा गुड सम मूत्र मे पचावे ॥ अंगुष्ठ
प्रमान वत्ती करै गुदा माहि दे हि
विं घ शूल मिटै ॥ अथ गुल्मरोग
लक्षण माह दो ॥ ताव पिपासा स्थूल
क कफ अरुचि होय पुन दाह हाल सद
ता कर पंडिता बात गुल्म कर नाहि
होर अजवायण पैसा पैसा वर तान
स लै सोंठ सतावर माहिं घरै सैसा
दर जो कुलाय पैसा आधा घे मर ले
र खरल करो मिलाय कपर छान
कर लेइ वछी भारी के मूत्र संग दं
क ए कदीय डै बात गुल्म नर होय
जतन यही तब कीजिये बात गुल्म
नर होय जतन यही तब कीजिये
रं ढोली का तेल पैसा भर दूध मे
ले कर प्यावै बात गुल्म जाय वैद्य
र हस्पे अजवायण जीरा स्याह जी
रा सुवे द धनियां मिरच पिपलि कर्पी
का अरु मोद कलौजी रेन के सा
है मासा सब सम हिंगल वै जवाखार

षट्लवणपांचो निसोत समानै अप
वगि सोंठी पुहकरमूल वायविडंग
अनारदाना दै इ वच अजमोद वेतसु
ठ ए सब समानै मात्रा कपरछान करै
चौराई की नीबू की पुट दे र गुटिका मा
षे प की करै घृत उस्न जलसो दे इकै
टनी के दुगध सो देइ पित गुल्म जाइ
वात गुल्म को मधु संग देइ त्रिदोष
गुल्म जाइ श्लोक पारदं टंकणं तां
गं घं त्रिफला को ष तालकं विषतो
षोमजं पाल्के मंगराजेन माहितं गु
जामात्र वटी कुर्यात् अदरक रस सा
ध्वितं गुल्म कुठारकं दो कर सर्व गु
ल्म निवारयेत् २ इति गुल्मकुठार र
सः अथ हृद्रोग लछिण दो० रषादा
ह भ्रम को करै अरुचि हृदै दै रोमा ए
ल त्रास हृद्रोग कै वैद्य जे कहाँ वि
चार अथोपायः विभ्या अनल सु
गं घ न सब उष्म जो जल सो पावस्वा
सका सहृदय शूल ही इनको गुर
तनसाय श्लोक कछु तै न दुगधेन गु
डं भसा बाधि विंवति चेतों कुकुभ त्विवा
य ते हृद्रोग चेतों ज्वरं रक्तपित्तं हि
त्वा भवेयु ष्मरजा वियुक्ताः पुनः दी
हा हिर सा अंग को भसम कर घृत सौ
हुग्ध जु प्पावहू दै कछु चिरकाल
की छिन मैं जाय पलाय चौ० १८ः
हरीनकी वच रास्ना लै इ पीपल सो मो

४६ घरा दे १ सांगी पुष्कर मूल समान
49 चूर्ण दे हिंदू देगा द्राने विद्धीसनी
हूकी जड का क्वाथ करै स जो त वा
ख्वार लवण पांचो घृत मे लगावे हू
द्रोग जाय ॥ अथ मूत्र कृच्छ लक्षण
दोंड ह स्तक मेंजो वहुत करै वायु जो सी
तल होय या तृषा न होतो लै फिर वहु
त मूत्र जा सो इत याच औषधि: सि
फ्री चार ४ पैसे भर सुंठ टक दश पा
च टंक चार जो बाइये बहुत मूत्र ना
जाइ ॥ अथ लालरि चरी मूइल पथी
मे छोटी हरड पाषाण दह सिला जीत क
न गोबरू बीरे कैथी इसै धालव रा
के स ए र ॥ अथ मा ंग सम चूर्ण करै गा
नतं दुल न डल सें पीवै मूत्र कृच्छ जा
इ ॥ अन्य ॥ या क्वाथ: कर वाला गोष
रूद्र हरड अमल तास पाषान मैद ॥ अस्त उ
वा सो द्राक्ष न सह त मे लै के काढ़ा प्या
व मूत्रदाह सब ही मिट जाइ ॥ अन्य
चप्रावल दो पैसा भर २ रास्ति को मे
रा भै जल मे पात मल के छाने ह
लदी पूर्वी मासे २ मेल प्यावे मूत्र
कृच्छ जाइ ॥ अन्य ॥ च गोखरू पंचां
ग क्वाथ करै मधु मिश्री मिला प्यावै
मूत्र कृच्छ जाइ पुनः या सेवकी जड का
वकल पीसकी तरै मेलै मिश्री
मेल प्यावै पित्त मूत्र कृच्छ जाय पुनः

जवाखार 'ताम्र मेल प्यावे मूत्र छुटै पथरी जाय अथ महा चंद्र कला नि भिरसो मूत्र कृच्छ्र पारा ताव्रेश्वर अ भ्रक मासे दस रस लेइ आवला सा र गंधक मासे २० कजली खरल में स वकी करै अनारके पाती कार संपुट करै सो था केतकी फूल रस देवी कुमार चित्र पाप ड़ा बसंतील मूसली मला व र सन की दृथक पृथक एक एक पुट देइ बटी चणा प्रमाण करै छाया में सु कावै श्लोक मूत्र कृच्छ्र गदो सर्वा विनि पमे हानि च दुस्तरं हंति श्री रामुना प्रोक्त रस श्चंद्र कला विधिः प्रद र अम्ल पित्त दाह अरमरी रक्त रोग जाय अथ मूत्रा घात कपूर की ब ती कर के लिंग छिद्र में मेले मूत्र छु टै पुनः सज्जी मूलतानी डले सरपी स गरम करके पेडू पर लेप करै किं चित ऐक करै मूत्र तेज रत छुटै में लके रस में पीस नाभि पर लेप क लिंग विषै पथरी पथरी पड़े सो मेल करी होय दाह पीड़ा अति लिंग में पथ री लघु हो ताम्र सो इत था वज्री ब पथ्यं बेल रहस्यमते ताव्रेश्वर जवाखार मिसरी के संग गोत में प्यावे दिन २१ अथ मथन करविधि सो कहै

प्रभु जगदीश्वर पद धरी योग अभ्यास महा
है ऐसे वषाने ताहू नारी होय तत कालह
ही अमरसिंह मथ ॥ यों हू तथा चवया
गत रिगिरावं घनि यांके स्वआ व ले
वे तिके तु सल्या वै रवि को मंगरै
के रस में सिंगो वै पान पल सामा कों
जो मेल पासे मिश्री पलले यर मेल
यो वै मूत्र घात पथरी जाय अथ
सुनाकी औषधि: वंग से न मते सा
त ल चौनी मासे ६ वडी लाय ची मा
से न जमा से ६ वंस लोचन मासा के
ल्या स्वेत मासा १५ पुडी सात बनावै
१ पुडी गोन रू अथवा गऊ का कच्चा
दुग्ध की लसी के संग पावै दिन
न क सुजाक जातार है दोहा पिन
पाप डाटंक छ ६ गऊ न क में संग
औरसा न दिवसो दे २ मूत्र घात पथ
री महा नाश होय तबहू तथा व
अमरसिंह मत अथ क्वाथ: दंताद
सुमलीन नाव ६ सुत मखाहा वि
दा ६ उस्तना ६ खियेपत्र ६ जुलह
जान अ औषधाय: पाषाणभेद ६ लाव
कादाना ६ तगिलो यनागकेसर वा
ना व ६ फल ले वुग्धी मस्तगी ले दस
संग घवि कुटा: नामें ६ २ सालम मि
सरी सिंहाले संघ अनेक गो घव स्वे
ती वंग मुसली स्वेत अरु तालम
खाना गुके मल गडे अरु सातावर वा
नांवस लोचन मुलेठी कौंन सव
समान डोमि सरी टान सहत संग गु टि

का

टंक प्रमान करै ३ अथ चंद्रप्रभा
व गुटिका चंद्रप्रभा वच मुस्ता ची
ता देवदारु हलद पतीस दारुहलद अवि
या हरड पीपलामूल घनियां त्रि
फला चव विडंग गजपीपल स्व
र्णमाक्षिक मारी भई त्रिकुटा सज्जी
खार सैंधा सांभर सौंचल टंक ८
मात्रा सब की लेइ सार मासे २० शिला
जीत कारस मासे १० मिश्री कर्ष ८
गूगल कर्ष वटी बेर प्रमान करै स
हत छाछ सो दे इ दिन २० प्रमेह जाय
उदावर्त स्त्री स्त्रात जाइ वीर्य बढिके
है बल पुष्ट होय पांडु कंडु शूल
कमर पीडा वात ८४ कुष्ट १८ मूत्र
कृच्छ जाइ अथ वंग भस्म रस पा
रा भस्म रती २ वंग भस्म रती २ गु
लर का रस: ८ सहत साथ देइ दिन
२० प्रमेह जाय अथ पंचानन वटी
चीता त्रिफला त्रिकुटा पारा आंव
ला सार मींगा सम लेइ चूर्ण करै भं
गरे के रस में खरल करै वटी गुंजा
प्रमान बनावै प्रातःकाल खाय कु
ष्ट ८६ वात गुल्म शूल वात कफ
को प्रमेह पथरी मूत्र कृच्छ प्लीह
पांडुरोग अम्लच ज्वर ए ते रोग नसा
य अथ प्रमेह रोग माह प्रमतैं चिंता
व्यायाम तैं रात्रि के जागने तैं स्वर
भोजन तैं उपजै है: घात सहत मेल

५२ सीतलजलपावैस्वुगातनाताइउ
51 कंचचराकामोष्टि दुहै: शेषोमेड
पथ्मात्त्वकैमौ शोसगेतऊ कंचरागि
रोवुपिवैलमधु:मनु कंगराग्नाषोपि
वैमवेतकिलौ स्पिशेष: १ ग्रसच्चे
पीपलंमधुनासेव्य मेद:कफविना
शानंघतूरपत्रसारगोविल्वपत्रसे
नवा अथवानीरकारसपीवैमेदरो
गजायप्रमेहगुल्मवातरोगासकु
ष्ट अपस्मारमेदरोगहोयीउदावर्त
गुतरोगजाय अथवातोदरलक्षण
सोरगवातोदरजिसहोयउदरशोथ्य
उगावतज्वरमहोअतिसारसिथल
ताअंगपरआवैहोइजेलोदरतोहि
तनकअन्नखावैनहिकहौकलोद
ररोगवैद्यलगावनहोयहोअवै
बद्धि:अजैपालशोधावैसामर
सुहागासमनलेइ ताप्रथककरै कजी
लीकरैलाइचीचारखलावैमिटै
उदरकोमारपुन:कटकरीसुकर
मौसादूरगुल्लवापूर्वीहलदरसजी
सुकेदअंविचाहलदीकौडीसम
केसमलेइसवजैदूनाकुगलेइदं
का॥२॥ठोइकीवटी करैगरमज
लसोदेइउदावर्तजाइपथ्य८ तंद
लभात छाछदेइ अथजलोदर
परमोगामूत्रछीनरध्योहरवेदुगधेम
सेकेमनकैविगलतायहिनइमहा
रेचननहोचंगाहोयउगावै अथशो
थोदरपरसार कैओबद्धि: चैपरपथ्यानत्रा

भारंगी लेइ अमृता चीता नागमोथा दै इ पुन
र्नवा सुंठ देवदार क्काथ करै पीवै ति
मीर ज्वर साहस उदर का शोथ सर्व दे
ह का हरै ३ सोथ अथ शोथ पर लेप
पुनर्नवा देवदार सुंठ सोइना इमली
के पातों का रस पीस कर लेप करै स
र्व शोथ जाय अथ पुनर्नवादि चूर
ण पुनर्नवा देवदार सुंठ सोइना
पाठ गोखरु कटाई अडू मोद दोनो
पीपल चीता वा साचरशीकर गोमूत्र
मै प्यावै सर्व सोथ जाइ अथ नाग
य शगी चै रस अड वायगा षायके
फूल धनियां त्रिफला सोफ वाय
विडंग अजमोद असगंध सारी
वचे जीरे दोनो त्रिकुटा षोहर जड
चीता सज्जी षार पंच लोण पंच
लवण सब टंक टंक कर लेइ सब
नैपा त्रिगुणी दंती दै यी सब ते दूना
नि सोथ कर लेइ सब ते दूना षोहर
लेइ षोहर दुग्ध पुट देइ सुकावै
जैसा दै बै तैसा देइ मासे दो या रकसी
देइ गुल्म हरै कोदुग्ध सो देइ दही
भात पथ्य आर उदर नादि रोग जाय
भगंदर पांडु स्वास काश गलगंड कुष्ठ
संग्रहणी गुरतरोग जाय: पुनः हींग
पाठ है इ धनिया चीता अनारदा
ना सारी धनियां अयवायगा वाय
विडंग अम्लवेतन वइ मली जीरा स्याह

५२ जीरा सुफेद चव्व पंचलवण समुद्र
52 सौंचरस मले इ अग्निचा समुद्र सेंधसौं
वलन्नन से धान्नन स्वार छय पीपल
पंचन्नन चीता सुंठी वायविडंग मिर
च चव्व इन्ता नि सम भाग नि चूरण कर
कै गरम जल सों माह वा इ करै परी
रहै तां को अंतर वृद्धि कहिये औष
धि माह जलौ का पाना नां चास्तेर च
नेंव मनंत थारि चक्रकरावै पुनः अ
रंड तैल पला दूध मैं मेल प्यावै वै
सा मर अंतर वृद्धि जाय अथ पित्तक
र अंतर वृद्धि होय चंदन मुलेठी पद
माष कवल गोदुग्ध सौं लेप करत
रवै दाह पित्त की हरत तै अंतर वृद्धि
कार जसारै प्रहे प्यावि फला त्रिकुटा
का गधा पाचौंन्नन मेल प्यावै प्रहे प्यासे
तर वृद्धि जाय पुनः पारा प्रवृद्धि गंध
क, लोहा वंग ताबकांदी प्यारो मरी
डई हरताल नीला प्यो प्या मृन कौले
ईंगर खमस्म अभ्रक तांमें दृ यी कौडी पी
ली भस्म ले इ त्रिफला त्रिकुटा सम
कर इ इ चव्व विडंग विधारा आनक
र पीपलामूल समान पाठा व च
इला यची जान देव दार अरूपं बो
रन चेरन करै हरड के क्वाथ की पु
टदेइ वटी बांधै टंक १ मान जलसौं
निवा लावै चावै नहीं अंतर वृद्धि
जाय इति वृद्धिवाताधिकारः अथ ग
3 माला चिकित्सा लिख्यते तामाहि मा
पामैं अजीर्ण वात तैं वर नेकहूवा निवार

के छिन न्यौत आवै र विचार को उसकी
जड़ लगावै घिपटै र फिर बाजड़ को बी
सके. लेपकरै अरू प्या वै अंजीर वेल
जाय अश्ली होय गले कें छोरै पकी
रहै ताकों गंड माला कहिये पुनःसो
हजने केबी जस र सो सनकेबीज जो
ड कीनके सैं नीर सेरवाय षष्ट्यो वया
लाम नै कचनाल की छाल न का का
ढा सुंठ मेल प्याव ना गंड माला जाय अ
थ श्लीपद चिकित्सा लक्षणमाह श्लौ
षद्यो दि सिद्धार्थः सरसो सुरमाद्रे वधा
र संठ गोमूत्र सों लेपकरै श्लीपद जा
य अन्य च्चु धत्तूर एरंड निर्गुंडी वि
षखपरा सोहजना सरसों इनको लेप
करै श्लीपद चिरकाल मैं जाय अथ
विद्रधि चिकित्सा लक्षणमाह श्लोक
जलौका तपनं सस्त सर्वस्मिन विद्र
धौ सदु विलोको लंघनं स्वेतपि तो
न रं विना १ उपाय जवगोधूम मुगधा
प्र पचोरा ज्ञेन लेपयेत् इनने पर
पक्के होय विद्रधौ र आदि विश्रावनं कु
र्यात् द्वितीय षमसेवच तृतीये पुपना
हं च चतुर्थी पाटली क्रिया ५ पंचमेसो
धनं कुर्यात् षष्ठे शेन चिकित्सेत्गरतेक्रम
क्रमाद्योताः सप्तमंचवक्तावद्यो अथ व
धि माह विजौरे की वकली हिंसादेव
दार सुंठ रास्ना आरणी लेपकरै वातै
होय विद्रधि जाय मुलेठी चंदन ना
ली की जड़ कमल गट्टे षसने त्रवाला
पद्माष लेपकरै पित्त विद्रधि सो य

जायवडुगुग्गुलपीपलसोंहूडनावि
सषवराहहडगोमूसोंलेपकरै श्लेष
माविद्रधि शोथजायरात्रकोलेप
नहींकरै अथगंभीररक्तविकारशोथ
पर श्लोक॥कनक्कलेयासबीनेर
क्तमोहनमेवचरक्तहीवेदनाम्रल
त्वचेनाशिवोपमहकृ अथलेपः
विखबपरादेवदारसोंहुडनासुंठि
सरसोंअसगंधपूंमुसलीलेपकरैसर्व
शोथजाइअथसीवणीजोधनीकिघ
पर अथोबधिमाहवेलगिरिदंतीबी
ताविसबपराकचूतरकीविठईल
कीविठलेपकरैशोमोवालेदारहरा
शोथजाय अथवृणशोथनिसि
थनिंबपः॥लेपकरै इतनोकाले
परीधनकरैवृणकीपीडाजायपुनः
लेपः पायटंक॥गंधकटंक१मुर्दासि
हटंक१केलाटंक२वेनापुराणटं
क१सममघृतमाहिलगावेवृणजा३
श्लोकअसंदृधिचशाकंचक्षीरगुड
राचानुपाक उष्णोदकं मद्यंवीजंधाव
नंचपरिवर्जयेत॥२वृणस्यपथ्यरा
काशाथयचयंचजागरणंनोचरत्ने
दिवासास्कासपानानाश्वमैथुनात
इतिवृणशोथचिकित्सालक्षणाम
थसत्यविद्रधिकोविद्यागंतवृणोवेध
छतदोहदससर्वविनंशानानाविधया
वैदासरक्तपितौपनाशनी॥२॥

कुष्ठं सद्यो वृणोजनादूर्ध्वं वो घाणञ्च
शोषघ्नं लेपं ये नवं चवलं ज्ञात्वा मोडनं चा
ष्टमो दून २८ कौविदग्धिते चैव सुतरा
मामिश्च ते घ्नतः तपोऽगुल्यं प्रवन्व सं
पाकस्तेनान्नुजायते ३ क्लिन्ने मिन्नेत
थावेच्छे दूते वामगनिम्न वेतरं कंदि
यात्तत्रस्रुपः करोति पावनं मध्ये गं सुने
हपातपरीष्टो बोलेप स्तेवदापवाहन
कुर्वन्तुः स्वेदवस्तिं चमाकृत यौषधैः
क्रियैः करोति पवनं पूर्वं घटो दृष्ठि
नेगात्रकः ततः कालपुरी वृत्तांगेह
कीमूल कैरसेद्ध वटस्तेत्रेणासाम्रि
कयनिर्वीत भवतेस्थितः क्रिमानायां
वाडिमस्वेणा वरम्रवेणाबासकैः लो
विकारं चपीतान्तुरामतायोकवोम्रे
नातयासं स्वेदयेत्सद्यो व्रणाशोघ्नान
मब्रवीत्र २८ नारीवसाहरेच्चैव सर्वव्र
णानिवृद्धने अथगुग्गुलं विडंगवि
फलात्रिकुटयाङ्कं जबपटोलपत्रस
ब औषधिः टंकेटंकसबकीबरोब
र गूगलघीवमैं रवरलकरै वरप
मानप्रमान खाय बेरा जायअे मब
वागं चाकसिंदूर मिरचलीला
थोथा मुरदासिंह शंख सुहागा म
नलेइ कवेला घीवमें खरलकरै
सर्ववृणाजाइ २ अथाश्लिद्रायपरऔ
षधिः मजीठ रक्तचंदन सारसोंपी
सजलसोंलेपकरै मला होय २ ।

५४ पुनः फरास का बकल ल्ले जलाय कै तिन
54 नैल सों लगावै चंगा होय ॥ अथ भग
दर रोग चिकित्सा ल ॥ देशा ब्राह्म लिंग
बरावर होय जो फूटा नासूर पर जाय ता
को भगंदर कहिये ॥ तथा च औषधिः
श्लोकः वट पत्राणि का सुडी गुडूची
च पुनर्नवा सुपिष्टं पीडये बस्ते ले
पयेच्च भगंदरे ॥ अन्यच्च विद्दत्री का
नख जलाय कै गोघृत मे लम लहै
म हरै को हाल लगावै भगंदर जाय ॥ अ
थ रस पराजर सः पारा भाग २ होय कर
ले ३ संमल खा ५ चतुर्गुणा दे ४ खरल
करै काकजंघा कै रस मै पहर २ सुका
वै संपुट करै तिस मे लमुद्रा बजै
दे ५ कपरौटी ७ दे ६ मुकाय हांडी म
धा धरै बालू जंबे कै रदे ल्है वर
धै अग्नि दे ६ पहर ८ स्वांग सीत
ल होय तब काढै सहत सुहागा
मेल कुमली को पल्लो पर धरै ज
दस हत डाल कै राब हो जाय तब
काढै रती २ सहत सों अनुपान देय
ऊपर त्रिफला काय पावै भगंद
र महा रोग जाय ॥ [illegible] मंमे थुनंपु
पिंजलै न व जीये तब संसरं नरः
॥ अथ दश रोग चिकित्सा ल ॥ दरा
माहदो हा वे रपा पुष्यबतीत्रिया
अरु कुल ललासंग भोग [illegible] संग

सोवतै होय षकरं गि रोग लिंग मैं फुन
सी उरै पदंश करै ग्लत्तिणा उपदं
श के अथ उपाय त्रिफला काथ क
र भंगरे के रस में धोवै सो होय मर मेल
प्यावै चंगा होय टांकी होय तौ त्रिफ
ला जलाय के सहत का ही मैं गर
के रगरै मरहम कर लगावै टांक
मिटै पुनः उपाय रसकपूर तोला
मर १ के सरटंक अकरकरा टंक
४ पान के रस मैं खरल करै गोली
वांधै ७ सात दिन सबेरी खाइ ये उ
पदंश रोग मिट जाय दूध भात
मात दिन २१ खाय उपदंश रोग मि
टि जाय तथा च पुनः उपाय शिग
रफ टंक २ अकरकरा टंक र वेरी के
कोमलों पर घनी दे ३ उपदंश जा
य पुनस्तथा च औषधि १ सकप
र मासे ४ मिरच मासे ५ पीपरी वांधे
७ दिन खाय उपदंश जाय पुनः स्व
न दूध का मैद अजवायन मिलावा
दोवे सामर रोटी काट गरै गउ इपुरा
णा २ वेसामर कूट कै वटी ७ करै
दिन सात औषधि खाय चंगा होय
पथ्य मैं घृत रोटी चावल मात अल
ना खाय अथ अंगमुद्द होय उपदंश
य अथ यातरवै व्यों पर मिलावे २ वे
सामर पारा मासे ५ मी मस्तंगी मा
स ८ लौंग मासे ५ मिर्च मासे २ गुड़ ३ पुरा
णा मासे ॥२॥ वटी वनावै ७ सात दिवसो

५५ 55 जो खाय यह पथ्य दूध भात खाइ म
खपके नौ ल्ला छु प्यो पै उपदंश जाइ
पुनः बेलगिरी आवला सार इलायची
छोटी मिरच लौंग पारा दो दो पैसा भर
लेइ घृत गजकामा से २० सब पीस ले
प करै गाव की चाटी सो पथ्य उपदंश
जाइ इति ज्ञान त्याप ग्रुल्कः पुनः कत्थ
सुपेद २।। पैसा भर गेरु क आवला सा
र २।। पैसा भर गेरु घृत पैसा २ अजवाय
न पैसा भर मिलावै संख्या २४ होय की का
ठ गेरै सब को कूट कै वटी २४ बांधै प्रा
त संध्या खाय अलोना खाय दूध भा
त खाय घृत ह्राव याला न खाय उपदं
श जाय अथ नरक्षय पदोल चिप
ला चिरायता नीव की छाल काढ़ा क
रै करै काढ़ै माहि कथ गूगल संपे
व पांच मेल प्यावै उपदंश जाय पुनः
चिरायता ना गोरी तोला सात ७ जंगी
हरड तोला ७ सात भुराक करिकै नि
थ प्यावै उपदंश जाय अथ दंतीया इ
न वि कि त्सा लहसन गुह सिंगरफ स
ली मक कत्थ सुहागा नीला थोथा म न
सेर माजूफल सोहन माशा नीबू के
रस मैं पीसै रात्रि को आयन सपैं म
जन करै दंतन के समस्त रोग जाय पु
नः अकरकरा मिर्च सैंधा लवण पी
स मंजन करै दांतो की पीडा जाय
अथ बवासिर तेल की रूंवे ला
कड वे तेल मैं लगावै मला होय

पुनः मेंडुवाके वीजपीसके कुपडेमा
हिछांनैकडुवे तेलमाहरलीवेलगा
वैमलाहोयशिरकोलगावेदिन७तक
मंडु मालाजायअथअन्नतपरोगः
औषधीमुखन्याईपरजानेकीविधिः
दोहरं माचंदन लोधमजीठकूटहरी
द्रा दोयपियंगुजसमकरलीजियेचं
दवदनमुखहोयअथपीनसकीऔ
षधिः अनारवीजपलं२ मिरचीअष
प्रमानगेरुयकपीपलओट द्दयपीस
मासकरहानटोंक४ वेरगासवेतेर्ष
मोरसौदूरपीनसमयातनकीमिटैव
हुरोखपवैदेह अथनेहारूवारोग
चिकित्सालदोहामाहदोहामात्रसु
लीअफमीवरवीसोंखमगायगुडसों
मंत्रखवाइयेरोगनेहरवाजायअथ
मंत्रः ओंआदेसगुरुकोकामरूदेशका
माह्यादेवीनेहरवाजायगोरखनेसर
दोहामरहघीअंगजुलाइकैमकुवनघ
तसोंपीसनाहूरवीचजोदीजियेनाहू
रवीचजोदीजियेनाहूजायजगदी
स अथनासूरकीऔषधिःपुनःनी
लाथोथाहलदपवीमरदासिंहघत
मैरलायमलहमकरैवातीदेयफिर
वानीछोडीकरिनाजाइअछाहोय
अथकरणरोगचिकित्सालदोहामाह
दोहारसनीवृकाकाटकैचंदनघस
कैलाइकरवीवाजजोपाइयेपीडात
रतनसाइ(जोयाकोनाओनकेकौ
डीमस्समिलायपीसपासवारीककरिवाति

५६ वातीनुरत्ताहिवनाहिरनाकवीचफूंकैंक
56 र्णांवहतारहजायकैवहिकर्णरोगनसा
ई ॥२॥ पुनः समुद्रफागपीसकैफूंकसेक
र्णमेंफूंकैकर्णांवहतारहजायपुनः
आवकेपत्तेलेपतेंदसलेकरताकाएकपा
नगरमत्वेपरसेककरकर्णमेंनिचोरे
कर्णपीडाजायअथप्रथमअजवायणल्ह
सनजलसंपीसकरकपरछानकरसु
खोष्णकरकैकर्णमेंगेरैकर्णपीडामि
टैतिलकेपातोंकारसमुखोष्णकरकैक
र्णमेंगेरैवधिरताजायमदिरागरमक
रकर्णमेंमेलेकर्णपीडाजायअथकर्ण
मेंजीवपडगयेहोंतिसकाउपाउदेवद्वा
रवचरोहिणीरसकुमारपुनतेलपकाय
कर्णबीचजोपाइयेकर्णजेतुकोनाश
पुनःहुलहुलकेबीजगोमूत्रमेंपीससु
खोष्णकरकर्णमेंमेलेकर्णजीवजाइ
अथशिरोरोगचिकित्सालक्षणमाहविषवी
मिरचासर्षपाऔषधिसमकरमेलिकज
लसोलेपनकीजियेशिरोवनेकोहेल पि
अथजीवनननासः अनमारैवकरीतिस
कापुरानागोवरजलाइकैभस्मकरैति पि
आककेदुग्धकीपुट८देइमुकावैतिस पि
कानासदेयशिरकेसमस्तरोगजायनि पि
र्जलाजायपुनःछोरपीसकैनासदेइशि पि
रकेकमिगिरैअथअनमूतप्रयोगःअ
थसूर्यावर्तआधासीसीपरऔषधिः
केसरमिसरीघृतमेंपीसनासदेयआ
धासीसीजायपुनःनौसादरपीसनास
देयआधासीसीजायअथशिरमेंद
लउठनेकाउपायतेलकडवाद१पैसा
मरबिसहलेमामेलपावैतेलशिरकेम
लैहलजायअथकर्णव्याधिकोरविकि
त्सालक्षणमाहवातोदरेषसपित्तवमने

कफरोगकेष्ठेष्वामतिंचिन्तरोगे
षुस्वेदेनेरक्तमोक्षणा: इतिमोचरस
कीतैलम् अथ किशोरगुग्गुलम् त्रि
मत्रिफलाद्विहिंतेथामहमात्तकाव
लैहोवा गुडूच्यादिहिंमेतया २
मेत्रिफलाविकलात्रिफलाबचादा
रुमिश्रानलानिंवक्षेथांकृत:
काथ: सर्वकुष्ठविनाशनं उग्र
शब्दरक्तालमारामाहि जंभी
रीरसमध्येतत्पक्वशोष्णां तु मंडले
दत्वाउष्णांटंकनेदद्यात रवरलैप
त्रिमलयैतत्रचतुगेरोगाहपर्टे
विवंधपदरर्धयेदोलायंवरेण
मी सस्वेदपक्वीपक्वमितेनलेरचर्ण
नोयेकांत्रिकेनक्षौकांडुकटनेल
केत्रिफलांबुनिततस्मिश्यानमण्डो
ल्यामलवातिमि: ३ ततःपाला
शत्वगरवारि विपच्यर्धमेसारशोवये
रतंलोहसरवाणंतुपुटकृत्वा
घृताला: ४ खादेतमिजायते पश्चा
स्वागत्रीतं समुष्करेरेश्रजावुग्ध
पुन: पिष्ट्वाशोवयेतगोलिकाव्र
तेसाधकंमसपालाशोंडिका
यांदद्वकृतेसंमवगच्छेत्रींकुडव
थ्यात्समवग्विवद्धता: ६ स्थाप
येहोलकंमवगुनक्रोंचमसात:

५८ यथा घमो वहिर्नातोनतथा
57 मुद्रमेवमु ७ द्वाविंशपदरे वै
ह्रिंमक्तावड्वालयेतथा स्वांग
त्रातं समुद्धृत्वा संचर्णानतु मंर
लेचहिमकुंदृपतीकारांनि हं
मेकस्यवर्मनिरक्रियांकायोम
नेष्यः पुरायाग्गुइयोगतः पश्चय
णाकरणाको त्तं विधिकाकांदूवा
दनंगुकविंशदिनंयावतलेव
लांचविवर्डयेत ॥ अथ षड्शानो
कुष्टानोवातरक्तंमथोप्युतंफिर
गरोगनं ॥ चैव हरताले विनाश
नं ॥ २ ॥ पुनः पुनर्नवारसेमायुत्ताल
कंदद्यिमर्दयेत दिनमेकंतत
स्मिन्रसघनत्वंगमितेसति ॥ २ ॥
कुर्वीतगोलिकांतस्यत्रोषयेत
सम्यगातपेपुनर्नवासमस्तांग
हारैस्थालीगर्भविधिः ३ ॥ २
येच्च ततः हारं दृढयेत्पीडयेन
हिंहारस्योपरितांदद्यात्तालक
स्यनुचक्रियाततः आछादनीद
द्यान्मुद्रां कृत्वा विशोषयेतस्थाली
चुल्हेनिधायाग्निंमंदमंदपडवाल
येत ३४ निरंतरमहोरात्रंपचेकंते
नसिद्ध्यति स्वांगसीतं समुद्धृत्वाहि
सीयाद्रैमणुतमापदतालकेचांच
नामांचमुक्तंगजामितंरसंगुडंद्याद्दि

क आयेन मनुष्यार्त्तिनाशयेत ७ अ
भ्रादरणनिकुष्टान्विद्रधीत दे बक्रौसे
वनात मनुष्यतिनाशसद हौ लवणा
स विदग्धयेत ८ इति श्री अमर
सिंह भि र चिते अमर विनोद भा
षायाम् द्रुतगंधवृहती लेमा लवि
धिनामपंचमोधिकार: ५ अथ पृ
वेकु ष्ट पर सर्वांगपृष्ट रीगुटिकाभि
लावे १००० त्रिफला ७ सकारके
मे मवेअग्निपर पचावे फिर ठ
डोलमे घोवे लौमीकाट ट्टा लै मिश्री
पल २: वा वचीपल २: त्रिफलापल
२० गूगल पल २० वेरवीस्वालम
जीठ तुंबी के बीज विसले मा की ज
ड दोनों हरद लदी द्वै वा दहर ड़ची
ता सब को पल पल मासा लेर कूं
ट कपर छान करे गुटिका वेर प्रमा
न वनावे दिन २१ दे इ पथ अलंना
खाय यारीगीमिस्सी चवेले गो धूम की मि
सा कु ष्ट नाय मलाचंगा होय ५ अथ
पंचनिंवादि चूर्णं सर्वकुष्ठपरि पुनः
का पंचांग निंव चूर्ण करे २ दल पल वाव
व चार प वार के बीज मिलावे वाय
विडं ग पी पल मिर च हल दर अाव
लेऐ ठ वाव चीकर वीलागो ष र्द
पल व लमा मा सव ले र चूर्णकरके
भंग रे के रस में खर ले पुट दे १ मुका वे

खैर की छाल का क्वाथ कर घृत दे यसु
का वै मासे २ भुलावै अरु द्रुक क्वाथ व
र ऊपर ते प्यावै अथ वा गोघृत प्या
वै तथाग् करंग वक्करी का घृत नादि
प्यावै तथा ऊट नी घृत प्यावै मास
मात्रेण मसा धयये त्र अषादश कुष्टा
नि हंति सर्वाणपरोगानि हंति नाश
य प्रत्र न संशयः सर्व कुष्ट विना
शनं पुनः वावची कुटकी नींब की
छील चीता त्रिफला क्वाथ कर प्या
वै सर्वाणि कुष्टानि इति अथ शी
तपित्त चिकित्सा लिष्यामाह प्रथ्मा
क शीत पित पुष्ट पटंपटोलादि क्वा
थैः त्रिफला पुष्करं कस्मा मिर
च क्ष पराप्य तेर पुनः करकते ल
कीम ईन करै उमडे लसे न्हाइ
पुनः आद्रके ड लंसं पुराणा गुड मेल
प्यावै शीत ल पित जाय अथ अम्ल
पित चिकित्सा लिष्यामाह गेहं
को मैदा मै मिलावै गात्रै मैं वस्न नेके
तेल लेपरवावे अम्ल पित जा
य पुनः शखि को कोयलां पर धरि
के ऊपर के गेहूं को धरै घृत दे
क पर ओट कै वायु लगै नहीं शी
त पित अम्ल पित दोनो जाय अथ
मसूरि का चिकित्सा लिष्यामाह
मसूरि कायां कुचो का लेपना दि कि
या हि ना पित श्लेष्म आदि सर्वी काः कि
या वात्र पराम्य ते रे हें ति मसूरि का
रुन पवित्र चदन क्वाथ कः पुनः सि
न व दन वांसा मोथा गिलोइ दार इन का

उलकार पावै मसूरिका ज्वर जाय
अथ मसूरिकाल दूसरां तीन दिना ज्वर
होय जिस पीछे निकलाय पदवीर त
विकार है अमर विनोद यो दियो व
ताइ अथ दुयाम चिकित्सा लदसां
पारा आवला सार गंधक शुद्ध गानी
लो थोथा वावची मिरच सादू सम ले
र चौगुणा छत मेल कासी के कटोरे
म घष नीव के सोटा से खरल ले पहर ४
मर फिर मल के धूपमें बैठे घडी
पीछे स्नान करै पक याम जाय अम
मन सिलवे सार भिलावे सरसो २
तेल के डुका ढका मरवा सन में मे
ले है ऊपर चढावे वासन के गलि
में सिंडु सी वांधे हाथ दो तीन कील
करी वांध खेंचे के अग्निवाले तव
वासन कूं पानी मांहि मेलै घडी १ कि
या वा घडी पाछे ऊपर से तेल हा
थ की उतारै शरीर पर मले घडी ४
पीछे गोवर मले स्नान करै दिन ७ त
था ४ दिन तक याम स्नान शरीर को
छीक मरी चादि तेल से स्ना पुन
पामादि रोग के वीना लिके रोग्य शु
र मांस शुद्ध वंतथा ७ अथ अफीम मा
उपकल टोक का पनडा शुद्ध गानी
रके रस में पीसे लोहे से पहले ग
र ले कफ याम जाय निकल जा
य छूत चौपर दाद जाइ पुनः शुद्ध
गानी लोथा या कत्था ताल गंधक म

नकोड़ी नीचूके रसमें खरालै गोली
वा घीसदादों पर लगावै जलमें घ
सकै दाद जाय इति दाद की औष
धिः अथ केशकल्पः माऊफल
कू अग्नि की मूसल में दाबै तद फू
ल जाइ काड कै कूट पीसै तिसमें स
माऊ चरषा रती ४ नीलाथोथा रती
तांबारेतिया डु रती ४ शुरदासिंद
रती ४ कसीस रती ४ आवले रती ४ क
टकरी रती ४ इतनानिहू कू मानि लोह
पात्र में रगरै आवले के रसमें द
यो राखै लोहे के कीहि नर श्वेत बालौ
पर लगावै ऊपर आर्द्र के पत्र बां
धै प्रात ते लगाय धोवै फिर आं
वले के पानी से धोवै मेमार श्याम हू
के राहोवै अथ कल्प केश श्याम हो
करने की विधिः तथा च तेल सा
वल्यो सिंगरफ तोला १ अफीम
तोला १ ऊंट कटेहली के बीज तो
ला १ धतूरे के बीज तोला १ कने
र की जड़ तोला १ लोह चूर्ण वच [illegible]
ट के [illegible] भर त्रिफला तीन पाव
कर तौ का विधि प्रथम तो त्रिफला
कू दो सेर जल में भिगोय राखै दस
र १ का रहै तब मथन करै छान
लेइ लोह चूर्ण को आवले का र
स दे के धूप माहे सुका वे पीस फि
र आवले का दे ३ ५ ८ ७ वार पीस
ना जाय छर मासा पीसै तद लोह चूर्ण

सिद्धहोयसंगरैकारसडेढसेरप
क्का ।।। तेलतिलकातीनसेरपा
वपक्कासबकाढ़ीमारहगेरैतेलके
सिद्धहरफाटिदिओषधकेचूर्णकोलै
दूधरसौसिद्धकुविफलाकेरसकु
कडाहीमाहडारैचूल्हेपरधरैइ
अग्निमंदमंदलावैसाधकरआध
देयघड़ीरतथादोघड़ीरतदउतार
लेइजबठंडाहोयतबचिकनेबासन
मेंमेलैफिरउसबासनकूमेंदधरै
फिरमट्टीलगावैमट्टीनेपीछेको
हैबासनकेमुखवैसेपटोलामहंडे
मंउतारलेहदूलैनहींफिरऊपरसे
तेलउतारताजायवहतेलवालोंकू
लगावैएकोहूद्धागारमेंजहांपवन
लगैनहींऊपरतेलकेकेलेरात
वांधैदूधभातखायआगलेदिन
पट्टीखोलैत्रिफलेकेपानीमेंम
लधोवैदिन७इसविधिलगावै
सरवमेंचावलराखेभमरकेसद्दी
जायमतनारंगाकेरूकलवैतेल
लोहचूर्णआंवलेकेरसकीपुट
७दइदेकेसुरंमासापीसकेत्रिफ
लेकारससेरउसबकूकडाहीमें
मेलकेलैअग्नितिदेरसउवखखकरै
पछीमेंगाडैमासरपीछेकाटैतेल
निकालैलेइतेलबालोंकोमेंमि
लकेऊपरकेलेकेपतेवांधै

८० फलेकेपानीमेंधोवैतिलमलै
60 अथवातेलमलैदिन७लगावै
धोवैदूधभातखायफिरसेतन
वालआवैनहीअथकेसकल
नानाप्रकारकाविषदोषचलो
हैकेलेकरएकपात्रमेंआवलेमे
वे३आवलेटंके५मरड३हे५परमा
नेपानीटंक८छायातेडानतामध्ये
रीमासाले१फटकरीएकन्मा
सादे२नौसादरएकरतीपमानस्मा
जेटंकउदहा१. लोहेशतमाडन
नकैदे३दिवायटंडाहोयमिका
लोताहितामपात्रमेंगेरैघडी
चारत्रिफलारसटंकैनिचोरैस
वडुऔषधिमेलकरघसैपि
लेकहे१इनदहीवहरसेगंधिक
ठवालोंकोलावैऊपरांउकप
त्रवंधावैपातउत्रिफलारसमें
धोवैमरकेशतामुखपरसी
हैअथलोनकेशोस्वाटनविधि:
रसोनपीसकेंपटोलपत्रमेलेल
पकरैदिन७तथा५४वाललेमें
पुनःअसरसिंहमतेमिायसावी
कोविषतामपात्रमेंतावसेरग
हैनीवकारसटंकैबालोंकेऊप
रलगावैबालउगैअथकेशक्षि
पकरणकाहलीवीजभोपासके
नरतवालपरलोवउठचावैजो

मातर्हीकेराकुरानेहीभाव अथके
राद्रीकरनेवेनाटेकरूरनाल
टेकपासकैवारीषतीलमारमैल
पीसेफिरकेलेकेरसमेंपीसलगा
वैकेरादूरहोय अथ आघासीसीव
रओषधिः लालकनेरनेकैपातो
कोरसमिसरीमेलनासदेआघा
सीसीजाय पुनः वीसकायत्रेकागद
ऊपरलिखीसमाहीसलपेटकातीके
रछपदेइसुंघावैआघासीसीजाय
नौसादरमैंघालनकामेलघसनास
देयतोआघासीसीजाय अथ आघा
सीसीपरमंत्रः ओंनमोआदेसगुरुको
आघासीसीरहुहुंकारीपावबा
रीमुखमूंदपालटभारीसमुंकाकीआ
घासीसीजाइसत्यफुरोमंत्रईस्वरोवा
चाइतिआघासीसीपरमंत्रः ओंनमो
आदेसगुरुकोकालीचिरियाकारू
टीकालेवनफलखाइकालेमैं
वछादेइकालेवनमैंजायउविह
गमतहीककमारीआघासीसी
जायसत्यफुरोमंत्रईस्वरोवाचाग
रुकोसबदसोचा अथमंत्रः आघासी
सीपरओंनमोभगवतेहरिमर्कट
मर्कटायपिंगलनयनायआमननि
कमायमलेवल्हिंहिंल्हिंहिंस्वाहा
सिं डिरोपवरसिरोवर्तैसाघयत्रोम
काकीआघासीसीजाबदरजामानवी

६२ कीआज्ञा न मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो
61 मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ अथ बाल गाने को
वकी गुठली दूर ड दूध में पीस के लै
प करै दाह खाज रोग जाय कवेल मुही
गा टुकरा लेप करै अथ लसीप बीत लि
खै सिर पिकोड़े फुनसी जाय पुनः बड़
का अंकुर मसूर तला ड के लेप करै
शिर के फोड़ा फुनसी जाय पुनः गुर
हार सिंह हलदर लाख चंदन न सौ
पीस लेप करै शिर के फोड़ा फुन सी
जाय अथ गुड़ बेलगेरी कवल के पव
का चूर्ण मिसरी संग खाय गुदा में री
जाय पुनः मेंहदी की मेंड ला गुदा पै लै
प करै गुद मे ग्रंथ जाय अथ पंसार
के हर ले अश्व बड़ी ड जल में पीस
लेप करै [illegible] जाय अथ वि
वाद का रोग सज्जी में घोल बच गा
सहत [illegible] कह बात लिपे
रोक लगावै पाव कई नहीं प्रभाव
[illegible] में गत [illegible] कर्प से
[illegible] के [illegible] सिर [illegible] रालवि
[illegible] के गो [illegible]
दध्यान को [illegible] प द ध ले
ता सर्व [illegible] विधा कर लै मंत्र
मा बरे २ लेपना [illegible] सिद्धि
कड़ विस्फोटक [illegible] अथ शि
[illegible] कविन नाशपति न सं शयः
३ इति श्री [illegible] रोगाधिकारः ॥ अथ
नेत्ररोग चिकि. [illegible] लदो तामाह

सें धागहृ पथ्यालै २ देव दाह चरणीक
रखै २ रसोत मेल लैप ड्रौ करै नेत्ररोग
पीड़ा सब हरै पुनः त्रिफला जीरा सोंग फूलर
के चंदन इलायची के फूल कजल करै पीसइ
यजोम नेत्र लेप कीजै परमान पुनः तिलके फूल
अस्सी ८० लौंग २ साठ दाने पीपल मद्दे
च वैली पुन मन सजो माग मिरचे
सोले १६ नाहि मिलावे पीस कर वटी
वनावै तिह नेत्र के रोग हरै सर्वते हि अ
थ नयनमलं तं अजनं श्लोक सौविहरीत
कीव न्याकुलत्थ विपरीत नत्था स्फटि
कं स्विद स्वदिरं यथ कुमाऽ कफलस
मं कर्पूरं मगनाभि च सम घुनाकोटि
नाशमन नेत्र पवरसी नाकचक्रवर्ति
गयोगतः २ मान नेत्र परं मांस बृद्धां
माऽलेपयेत २ अथ नेत्ररोग हरि हि
द्वि वदी हरिद्रा त्रिफला पवाहिरि पिपली
मरचानि च मद्रमोथा विडंगानि सप्त
मं त्रिफ्ल मे बजं गोमूत्रेण गुटिका कु
र्या कुगमसेत्र वांतं नात र-ज्वराक्ष
निहित लानेह हृन्मानरमस तवेत्रांतयेव
लां जनानरन तांघं मे गराजेन नाशी
रैशा पुनस्तो २ अथ नेत्र मैं पानी जा
ता है यतिसकी औखधिः गेहूं को
सा कीचाली मे मेल के पीसै फिर को
सा के पानी मे पीसै डलमाहि जद
कर है हो जाय तद नेत्र वी च मैं डाल
करै नेत्र पीड़ा दूर होय जाय पुनः की
कर की छाल पेसर मर जल्लैट के ३२

 काढा करै जब चोथा २ रहै तब छाणि लेवे
फिर कड़ाही में मैल पकावे गुटिका
करै नेत्रां जन ततः कुर्यात् त्रीणि हंति तिमि
ल द्रोणान् तिमिरं पटलं काचं च कंडु
नयनि चांजनात् रसीत लाजुमित प्र
बंधनात्राय नात्र संशयः सर्वदा नेत्र
रोगानि अंजनं तिमिरं हरै तर अथ
नेत्ररोगे क्वाथः बांसा ८ गिलोइ २ दा
ल चीनी रक्त चंदन चीता चिराय ता
नीव की छाल कुटकी पटोलपत्र त्रि
फला हल्दर बहेडे के बीज इंद्र जव स
मक सम लेइ क्वाथ करि पावे नेत्रां के
संपूरण रोग जाय शीता निंशम वरषा
हं का संपीन सम मेव तु अथ नेत्र फू
ले की औषधि माहु साल वमि स
री सिंदूर मिश्री वरावर अथ वोरखार
में लै नीव के रस में खरल करे पहर
२ फिर तामें पात्र में रगड़े पहर १ फिर
वी नीके पात्र में अंजन उठाय धरै ३ तीन
दिन पाछे अंजन करै नेत्रों का फूला
जाय अथ द्वितीय प्रकारः फूलेप
र पुनः हस्ती दंत गज का डाढ धूक
र दंत ऊंटनी का डाढ घोरे के नख म
ढे का नख मोती सच्चे अंजा दुग्ध सो
वडी वां घोषे औषधि पहर १२ छोटे
खरल में फिर अंजन करै बालक को
माता के दुग्ध में घिस लगावे फूला
जाय लवण पुनः कासी का भ जव न
नवपुरा ठठेरे के से लावे लोंग ७ग
घे के लेउ सो जलावै लौंग कपरा

जाय

मूनके ऊपर कांसी का कटोरा औ घू
घरै घूवा लावै गरु का घी वमे है
उसी कू टोरै मैं रु गारै नैवे कीवा दूसरी
यह पानी जाना है यसो घूं मैं औ रव दु
रवकै छोटी पर जाय फिर वैसी औ रव
होय नेत्र के सब विकार जाते रहें अ
थ कर्णरोग में कर्णरोग च कर्णहै बधि
र्य है दोउ वच चतुर्थ विचरोग षसामा
नं में बजे न रात औषधि: औ रव
के पांसा पी लै से घत तचो पै रै अग्नि प
त र तते करै रस नि चोर कर्णमें गेरै फू
लमिटै कर्णपीड़ा जाय पुन: औ गोमू
त्र मैं सैधा लव सा मै लकरि उसे कर
कर्णमें मेलै तो वू फूल जाइ कर्णके
छु होय अथ कुष्ठादि तैल कर्णरो
गपर औषधि: कूट हींग वच देव दारु
सोंफ से धा लव सा अ गामूत्र मैं तिल
का तैल सब औषधि तैल मैं पकावै
सिद्ध करै कान मैं गेरै कर्ण फूल जाइ
पुन: अथ कर्णकिमि पर औषधी धतू
र के पात के लसूरी की जड़ संभा
रसनि का लै त्रिकुटे को चूर्ण मेल चा
रो कू एक ठे करि जो कर्णमें पूरै कर्ण
के कृमि जाइ सर्वथा कर्णपीड़ा कोड़
लो का पू सिद्ध है अथ नासिका रोग
चिकित्सा लक्षण नाम हृषि रचना हृग
उ के पात मैं पीवै पीनस हराय पुन: त्रि
कुटा अप्माबेत वचना लीसह जीरा चि
त्रक तेल री क के बीज तत्र पव ने उ लायच

६३ सर्वऔषधि कर्ष कर्ष मात्रा लेय
63 गुड मै गुड का २० का घीरै पीन सहा
सका सह्या मे र गुत सेरोग जाय अथ
दंतरोग चिकित्सा लष्यते। माता ह
री लेची नी मोथा हरड त्रिकुटा वा
यविडंग नीव के पात गोमूत्र में पी
स गुटिका कर वांधै दंत स्रोमंजन
करै दंत श्रोघ स्तक पीडा जाय पुनः
फटकडी लीला थोथा कस्था तेज
वल वंशलोचन मजीठ स्रमीम स्त
गी से घा लव ह्या माजूफल सुपा
री चिकनी निगुंडी के रस मे र्खर
ल करै पुट २० दे इ चेवेली के रस मे
पुट दे इ १७ र्खरल कर इ सुकावै दंत
मंजन करै व जो दंत हो जाय दंत कै
समस्त रोग जाय अथ जिह्वा पाक
चिकित्सा लष्यते। माता ह जवाखा
रे जव ल वेर की लकडी पाउ डे व
डार हलदी पीपल कुटकी कायस्था
न करै सहत मे गुटका करावै गु
ख गल मे रोग जाय अथ मुख पाक
चिकित्सा लष्यते। माता ह चेवेली
के पात मुख मे रावे अह गिलोय दा
रु हलदी त्रिफला का दा करै सह
त मे ल कुछ्या कर रावै मुख पाको च
ला है जाय पुनः चेवेली के पात मु
ख मे रावे चंगा होय अथ सर्व वि
नीव २ ७ सम ध्या जमाल गोटे की
हील कावै घरै दिन ७ फिर उस
मै मे काढै किर दूसरे नीव के मध्य

६३

धरे दिन ८ इसी तरह सात दफे सात
नी हूमे राखे बीस वटी कर राखे सर्प
काटे को अंजन करै इती रतनधार इती
विष सर्प हरै सर्व विष जाइ ७ पुनः
अंजन मिरच सनाहू मोर के पीतामे
सात राखे सक जाइ तव तक मिरच घि
सा के अंजन करावे सर्प विष जाइ
अथ बिछुरा विछुक के विषे न सो
दर हरताल डल सों पस लेप करै
वछिक को ग जाइ १ पुनः अजमा दारहि
रस के बीज नौसादर इनका लेप क
रै चंगा होय २ ब्रिछु के विष सर्व ह
रै अथ बावले कुते का अथवा
गीदर को टेकी अ बघा तत्ता तर
माह सूहे दे का पंचांग सेर रावेंदाक
को डाकी जड़ पांच रके मर पजके
टेला का जड़ कुठ का मर १० वकेतां
वे के २० बीस की कुटी टके ११ इनके
साट मारहू थी ले माट मे जल सेर ५
गरे माट की मुख मुद्रा दे २ चेल्है
पे चढावे अग्नि मंद मंद दे इन दूज
ल पावसेर रहै तब छूटे टांक मर ज
लप्यावे ह बमिटै घटी ३ पथ्य
लवमा नरै चन होय यदो बन हीहै
अवस्य कर पावे हर बमिटै पुरु
ब प्रयोग तीन करै ३ इति श्री अ
मर सिंह विरचिते अमर विनोद
माषा वैद्यक रोग मते मध्य
स खंड चिकित्सा लदशामानाम
[illegible] यः ६ अथ पीतर

खंडे चिकित्सा लखदेशामाहतव
तावतरे चनाच्चिकाश्वरः सनाह
पैसेयडंगा हाडडरपै सेमर गुलकं
ददपैसेयमरकूटेमहहतमैवडीक
रै तोला१उ बीजलमोदे इउदर
कीव्याध आमकेसमस्तरोगजाय
दिन७ तथा मैदेइउदरकारोग
वाइजाय उत्के चदोषाकृयाच्चितकु
र्वंति त्रिनालं घनपाचनैयनुरां
सो धनैः शुद्धानतेषांपुनरुद्भवः
अथमनदूररेचन समाप्त्य पै
सेमर कचूर कचरी इलायचीछो
टीके बीज मुलैठीये तीनों छो
म छुदाम मर। लोइकपडछानक
रै मिसरी पैसामर २ गुलाबतोला
मरकलहेरीमासोमर महहतपैसा
पवटीर तोलेकीकरै घडीपाछे
गुलाबमिसरीमेलपीवे मयकीस
नायटकामर २ पीवे दिन उइंव
लीकागदा आधपाव कोमिसरी
टके ।। अथउजलेमें मेवमातपा
स्तकीनरह मलकरछानले
मिहारमिश्री मेलपावे दिन ३उद
रकेसमस्तरोगजाय अथ लौंके
जनकी विधि लिख्यते नीलीक
लीअकोलमंगावै औरपानका
चूरा जुगतकरै तो पोरीकीतेमन
का और अघराहि रता मवमेंचि
रकिदि७ मैवैधिरियां सात सबका

से प्रथम मंत्र का जाप करिये पीछे
उनतन वनावै अष्ट धातु का जंत्र
वनावै तामें मलगुध ये अष्ट व
ध कीकं ना होवै ताके हस्त जु धरि
ये मस्तक मंत्र का जाप करियै लै वि
विधि नीको धरियै ताउपरयह
मंत्र जताया गुरु से वाडु करियै ग्र
स मंत्र जो गुरु से ली जै ता पर चित
लगावा ॥ अथ मंत्र ॥ ॐ नमो ह्रीं ह
ह्रीं सर्वा आदहु संपहुं हुं क्लीं ल्कि क्लीं ल्कि
मि मि ह्लौं लौं लौं ह्लौं ह्लौं आदह प
कुरु कुरु स्वाहा ॥ अथ संख्या विधिः
अवेतर प्रथम दिवस सहस्र संखि
नीय दिवस संखि सहस्र ले तरनीय दि
व संखा कल ले उपरत व उतम
विधि मौन साधये र दोहा सोने
स्प का न वीज कर गोली नामेध
रि यै मुख मैं राखै जब सत गुरु का
त सा खे ल ग्र करियै यही खल
है महा सिद्ध का सिद्ध होय मेले
वैय हस सार सकल ह्रदै षेष या
हिन का उर्ध्वे खेयही येव है स
हा कभि न करै नाहिक षंधा मेले
इति कुलानमस्ते ॥ प्रथम मुखव
धव करै उपाय व कपूर कचरी पत्रज
कसर पान कर क ब खर लकर
वलो प्रमा गा वटी करै मुख में रक
व मुख वाई दृग धता जानीर है अ

अथ बवासीर खून की दवा लिखीती इ
लियते बील घृत के बील सौंठ ग्र क
बेर कै पूर कै चरी गुड सब मासा पां
च पांच लेइ सनाह पै सार रस मरि सि
रि इ पैसा भर सहत पैसा भर कै
खाले का रहदा पै साह भर गोली
टका तीन ३ भर की करै गोली सी
त खाइ ऊपर सें लोंग घी ला भर
कूट कै टका भर का यक करि मिस
रि तोला भर गुलाब तोला भर
मेल प्यावै आम उदर की वाउ जा
य दिन ३ टे २ छेद सनाह मासे २०
सुंठ मासे १० मिसरी मासे ३० कप
र छान कर कै पूरी तीन करै २ एक
पूरी संध्या को दूध से खाय उदर
की आम वात जाती रहै पथ्य खि
चरी मूंग की दाल की खाय अथ
रेचन रस: पारा मासे २ गंधक मा
सा ३ सींगी ते लिया मासा ४ सुंठ मा
से ५ सुहागा मासे ६ चीता मासे
सब को मां बरोबर अ जेपाल मा
ष कै मेल कूटै कपर छान कै
र के पान कै रस में खरल ले पूरा
करती २ तथा ३ जल सों दे ३ मह
रेचन होय पथ्य भात म हो
वा दाल भात मूंग की खिचरी अथ
जमधनियां सिर चेरगर का यमि
सरी मेल पीवै पातसे प्यास में अथ रै

चवनर पनिपूयोगः गुदहगानीलाघो
घाघोदहरकादूध अरइकीजड जमा
करै १ चवनहोयकाहलीआवेनदू
नारलेइ अथ वमनकरावनेकी
विधि: करंडेकीगिरीमूनलेइदेइ
इनहदोनोंकोजलमेंपीसपावैवमन
होइ पुनःमैनफलपीसमहतसोंच
तावैछुद्दहोइ यपटलेलघुअनदे
अ अथवाद्रिकरतोंकनकवीजसिर
साहीआनवेगनरसमेंमीगेडानघ
पसुकायतीनपुटदेइ तीनवारइस
गंधमिगोयसुकायपिसायहोरमें
पावैदूधमेरकाबावाकरावैपीत
गिरि जुविदारीकंदअजमोदाजु
विदारीसंगचवक्रआसगंधनोवा
वचीजेअकर्कराबेरीलोचवनडली
सोपलेबीनमधनाःलगोटेटंक
टंकसमलेइ चूर्णजलमेंपीसेनामि
लेपनाइ२ जाविवैनअनकायफ
लले इजातीफलछयजीरदेइअ
जवायनअनतालमषागोषरू
तिलसघोरेजानायसवसलेनीकी
कैकोलपंचपांचसटंकदिनोल
चूरराकरकीदीजुमिलावचौथा
सागमोचरसपायसैमलजडनी
कीत्रसनचय्रनकरकपरमैंछान
रवांइ अमा हो १८ पैसामर ब्रतमधु

पचटके मरडार अथ अस्त्र करानि विधि:
धतूरेके बीज पेस सिद्ध करै हुयलि
नहू धमै खोवै को छतमें मूनलेत
वे खांडु की पातकर खांवा मिलावै
किर सव औषधि कुपर छानकरी
उई मेलै गुटिका करै टकर मरहू
धमातपथ्य ही करै सेप्या आजे
दीपक छूटै सहजे सहू उमैमैय
नकरैयह औषधि कागुण अस
सरै ॥ अथ छुहारा के बंधेज विधि: छु
हारे आध सेर कुचले पो सेर में गला
वपाव मार कुचले मून ले नहै कू
रैजल सेर २ क राही मैल मलपका
वै तव जल आधा रहै तब छुहारे
८ लेइ अफीम थोरी सी पावै उसी
माहि घोल ले छुहारे को चटावै खांड
सेर २ आधी की पातकरै छुहार
को चटवै खांड सेर २ आधी की पा
तकरै छुहारे पागे संध्या पात पाय
स्तंभन होय इति बाजीकरणं अथ
कामेश्वर: छुहारा बीज बादाम
धतूरे के बीज अकरकरा सम हूसा
वमा जेफल बसदाल चीना
ती आधी विजया मेले दूना
सो वारस्तंभन होय अथ लेवुल
ली विला स वाडीकरणं मिर
च कूट सतावर आनि दुलाय चो
लोग डाविडी जान दाले चीनी ता
यफल मानि हिं बारा मह सलीको स

वपान असगंध सालम चेंदन परमा
ने नेपमन वार वीर मुल लेठी आमला नि
द्र वा नि सम कर दाना पुत्र यकं कर्ष
कर्ष मा ग्रा ले इ के सर मासे पांच ऽ
दय अगर आर्द्र टंक पर मान चा
वली के पुष्प ७ मातमा आन क
पुर टंक नु के लैय पु जान अ वर
मासे १ एक पर मान वि जया कर्ष २०
चीस नुम लेइ मा मा तो ला । मर दु ग्ध
के संग खाइ अति भोग विलास हो
य अथ वर्द्ध द्वे द्वी विलास: जाय
फल इ न खर लौंग उ इ लाय ची ४ के
सर प नाग के सर इ तता ४ पत्र ज
त्रिकुटा ह पीपलामूल ३। चीता र
मूसली दो नो इ क चित्यतमाल प
त्र इ ऊ डं गरा इ धन्ने के वी ड इ कु
ट सा नी अज वाय न इ ष्ठ ३ इ आपी
म इ अ क कंरा इ बहु फली इ मोथा
इ विडंग इ मलया गिरि चेंदन इ स
मुद्र सो ष इ ष डिर इ सिंहारे इ वंगर्भ
२५ अभ्रक २५ सार २५ विजया २५
केसरी सब तेद्दूनी गुल कंद श्विग
राव दरी पर मान मु क्त यं पुष्प क
है सं तम न हो इ पुन: जाय फल जा
वित्री लौं ग के सर इ लाय ची लब
आफी म अ के कर्षे रा पत के कर्ष मा
त्रा हि कपूर सा नै पानी के रस में ब
टी बांधे चणा के प्रमा ण वेल पचि
करै निकर रास लेप अथ वंध्या प्रयोग:

६७ प्रथम दया धर्म करै महादेव सब वाल
67 देख उदय ताती तीर्थ स्नान करै सूर्य की
गऊ वछड़ा पुन्य करै ॥ तो उ पाय
पूर्व जन्म के पाप दूर होय पश्चात
औषध ग्रहः कर्दम को छाल तथा फ
ल वे सम समभाय को डी मीपी वे
पुनः ताली गेहू विडाल पद सीन ल
जले न चूर्ण थे दिन प्रातः उपरांत पावै
गर्भ होय अथ [illegible]
हसान बारे पप यम घर राजे की
होय पुत्र क्ष पराठ हरे नहीं घर राप
रवाय होय पुत्र के स को चन होय र
तनी ये मास वृद्धि होय पुत्र क्ष पर ल
जाय ऊंच तीर्थ घर राम हो टको रा
होय पुत्र वी ज च ट जाय ४ । प च र स
सी होय वीर्य सोब जाई पव घर रा
देवी होय वांजे विच्छ ल जाय रसा
त वे दोष अथ का ला र वटी पर स
ते हर ड टंक १ ह चीता टंक ३ पा
टंक २ इलायची टंक १ नागके
सर टंक १ त्रिकुटा टंक ३ पीप
ला मूल टंक २ [illegible] वे सलो चन टं
२ दाल चीनी टंक १ सुहागा टंक
र नार २ गुड पुराना १० लवंग टं
क २ जावित्री टंक २ जाय फल
टं २ अकरकरा टंक २ पारा गंध
क कजली सब औषध पीस क
र कपर छान करै के जोली बांध
रवरल करै गोटिका पात कर के

सवचूर्णगेरै जरबेर फूमानगोली
बांधी बायचौपही डाय अथ प
द्वंध्या लक्षण माह परिहाप
हबकी के संग मकार तीवर पूछे
तेर क धं दु:ख है जहां दुःखतो है
य उ सील दस ता की जाने माथा दु:
खि प्रथम प्रकार जो न दु: खि द्वितीय
य प्रकार २ हड फूटनी होय तृती
य प्रकार ३ कटि दुःखती होय यवं
ध्या का चतुर्थ प्रकार पगतले
दुःखती पंचम प्रकार ५ वंध्या न कु
दुःखती षष्ठ प्रकार सात वने
यामी जानातो होय अथ प्रथम वंध्या
वंध्याप र औषधि: विनौले की
गिरि गुर गी का विता ग कौली
गोरै बती कर लवे पै है मगावी च
ह्कै गू कु दिन राखै
विधि करै अथ बार ही
करै प्रथम जो थैते चौथे दिन
पुरुषसंग करै दही यपी है
की चिकित्सा ल इति प्रथम वंध्या
पुन: विनौले की माह विधि:
का वाती कर जौन में दे गिरी ने लतिला
र इति द्वितीय वंध्या चिकित्सा ३ दिन ता
कल्लौ जो ही थी का चिकित्सा
जौन मैं राखै ३ सावन वती कर
का पानी इविफले
यग मे धारै १ पथमे अनार का कली
कानानी अलसी नेलगला वसम

श्री बधिरनमें बातीकर जौनमें राखे
दिन ३। पंवच काली जीरी बायबी
कलौंजी तिलका तेलबातीकर के
दिन ३ जौनमें राखे पश्चात् संगम
करै गर्भ रहै सम्पद्दो बमें यंत्र लि
खियंत्र माहि नरवमोर का पंरव है
लदमहदी है सी दादकेरसकौ लि
खै स्त्री का मध्य में नाम लिखि यं
त्र केली च कि रकुमा सबों हो स
पक्की बत्ति हैं गर्भ रहै ७ श्री स
मस्सिद्ध विरचिते अमर विनोद मा
बायां पुत्रसप्तस्त्री वंध्या प्रयोग विधि
उतर खंड पुत्र प्राप्ति विधि देनाम
सप्तमो ध्याय: समाप्तोयं ग्रंथ: श्री
ममस्तु शुभमस्तु ओं स्वस्ति श्री गणेशा
य नमः ॐ सद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

७।	७।।	७।।	३१	॥५	४॥	६	२	३॥	रा
५	७	८	७॥	७॥	५॥	२	४	१०	क.
७	०।	७	६३	६	७	७	७	६	ह
॥	७	७	६	६	६	७	०	३	का
५	६	७	७	७	७	७	०	६	ल

श्री गणेशाय नमः दाम नबनका
ईने सिकंदर बादशाह मामरो बमुना
जसै वता । ५ ६ रह महीने मामा अमनिवि
खरा ई २८ श्रुठ वे दृ वा सो लिखि
ते गोपाल दाम सवपठना र्य है बि
यराम नाम कृष्ण कृष्ण कृष्ण






220